THE BOOK WAS DRENCHED

TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182545
UNIVERSAL LIBRARY

॥ श्रीः ॥

कलियुग की सती

नाटक

दी व्याकुल भारत कम्पनी लिमिटेड का प्रसिद्ध खेल ।

लेखक—

आजादी या मौत, हुब्बेवतन, मुसलमान की गाय वगैरह २ के रचइता मुंशी अब्दुल समी साहब "आरज़ू" ।

प्रकाशक—

उपन्यास—बहार—ऑफिस,

काशी, बनारस।

(*All Rights Reserved*)

प्रथम बार] सन् १९२१ [मूल्य ।।।)

नाटक-माला सं० २६

उत्पादक—
शिवरामदास गुप्त,
बनारस ।

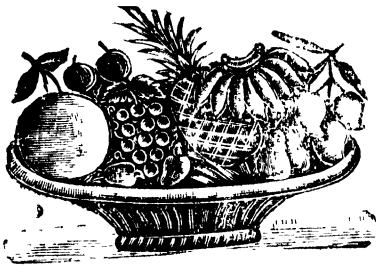

मुद्रक—
बाबू सूर्यनारायणजी,
जगन्नाथ प्रेस, काशी ।

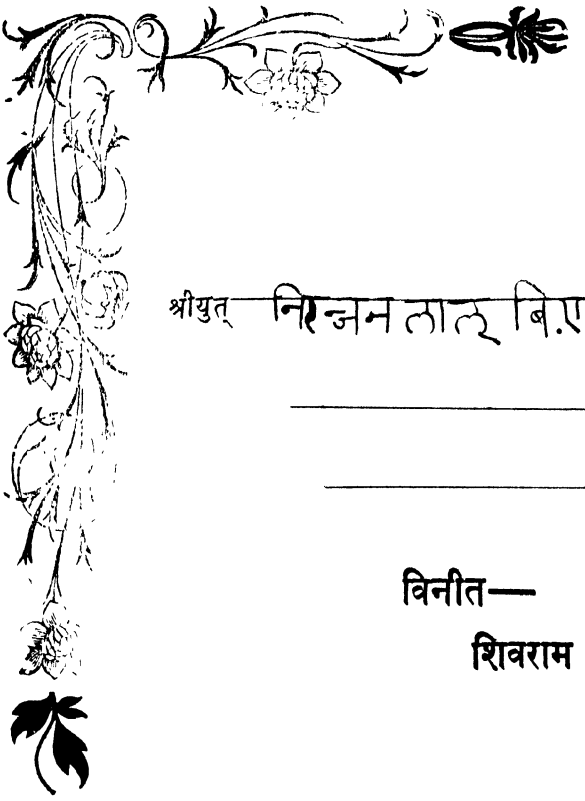

श्रीयुत् निरंजन लाल बि.ए.

विनीत—

शिवराम ।

श्रीः।

कलियुग की सती

वा

मोहनी।

अंक पहिला-सीन पहिला

गाना

वारी बलिहारी, तेरी कुदरत की गुलकारी, क़ायम की-
सरदारी, फूल रही हैं कैसी ये फुलवारी ॥ वारी०—
चमचम चमकत, अपार माया, कैसा तूने असमाँन बनाया,
फर्श विछाया, शमाँ जलाया, बादल रिमझिम मेंह बरसाया। वारी०-

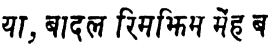

अंक पहला-सीन दूसरा

अजीतसिंह का मकान।

(अजीत तनहा खड़ा है)

अजीत०—रनजीत ! पस्त फितरत, कमहिम्मत रंजीत ! तेरी उम्र भर का सरमाया, तिजारत में घर नीलाम और सामान दूसरों के कब्जे में आ चुका, इसपर भी मेरी और तेरी खानदानी अदावत में ज़रा भी कमी न हुई ! तूफान दरिया की तरह माथे पर शिकने डाले पूरे जोश के साथ तेरी कोशिशों पर पानी फेर रहा है, मगर फिर भी मेरा दिल ठण्डा नहीं हुआ। शत्रु का नाश हो और मुझे खुशी न मिले ? समझा २ अभी मोहनी बाकी है, वह भी इसकी हिस्सेदार है, उसका भी यही अञ्जाम है।

कीनये दिल फाड़ कर पर्दे, अयाँ होने को हैं।
दिल में जो काँटे हैं वो नोके ज़बाँ होने को है॥
दोस्ती और दुश्मनी के इम्तहाँ होने का हैं।
अब अयाँ दम भर में सब राज़े निहाँ होने को हैं॥
दुश्मनों के ऐशको तदबीर पस्पा कर चलो।
शुक्र है तक़दीर राहे अमन पैदा कर चली॥

(आना रणजीत वग़ैरह का)

रणजीत—मित्रो ! तुम मेरे शुभचिन्तक हो, इसलिये मेरी हालत पर कुढ़ते हो और यही कारण है कि मेरी मदद करने के

लिये तुम्हारे हृदयमें प्रेमका सागर उछलता होगा! परन्तु संसार की लाज, मर्द होने की शर्म मुझे अभिलाषा इरादों, हतीत कोशिशों के शरण हो जाने से रोकता है। माना कि —

मिल कर रोयें रोयें से रूई के बना है सूत।
पर दूसरे के बल पर नहीं रहता है राजपूत॥
हिम्मत मेरा कवा है तो मैं हारता नहीं।
परमात्मा के हुक्म में दम मारता नहीं॥

मोहनसिंह—रणजीत! मैं मजबूर हूँ कि अपने पिता के जीते जी अपनी मंशा से माल व असबाब, रुपया पैसा तुम्हारे लिये कुछ ख़र्च नहीं कर सकता! वरना आज तुम्हे परदेश के लम्बे सफ़र को जाने न देता।

अजीत०—लेकिन इसमें डर की कौन सी बात है? ग़ैर जातिके लोग कालेकोस धन्धा व्यापार करने को जाते हैं, पर हम हिन्दवासी ऐसे बोदे हैं कि घर जोरू बच्चे छोड़ते ही नहीं और वहीं बैठे २ मक्खियाँ मारते हैं। देखो जापान एक छोटी सी कौम है, लेकिन आज कैसी बढ़ गई है और यहां—

सड़ी धोती वही अपनी वही टोपी दुपट्टा है।
न बदली झोंपड़ी घर में पुराना बाँसबल्ली है॥
वहाँ कुर्सी है औ टेबुल यहाँ चौके में पीतल है।
वहाँ है बूट फैशनदार यहाँ बेडौल चप्पल है॥

रणजीत—सत्य है मित्र, सत्य है। आपका कहना बहुत यथार्थ है। आज भारत के कालिजों से सीखे हुये विद्यार्थी हममें ही वेद का प्रचार करते हैं, हमारे हृदय में हर एक प्रकारकी शिक्षा भरते हैं। अच्छा दोस्त! यह तुम्हारा दासानुदास अपनी अर्धांगिनी से मिल कर आने की आज्ञा

चाहता है, कारण कि उसने अस्ट्रेलिया जाने का दृढ़ विचार कर लिया है।

मोहनसिंह—अच्छा तो हम स्टेशन पर चलते हैं, क्या आपके दर्शन वहीं होंगे ?

रणजीत—अवश्य।

मोहनसिंह—राम राम ! (जाना)

रणजीत—जैराम ! ए सुख, शान्ति, दया, मया, और आनन्द के चमकदार धागों से बुने हुये वस्त्र, तेरे धागे एक एक करके मैले पड़े, गले और गलकर टूट गये। अब म नंगा रह गया। मुझे छिपाओ! मेरा शरीर ढाँको ! किन्तु नहीं, नहीं, आह ! तुम सबभी मुझे देखकर हँसते हो। हँसो, हँसो और अपनी घृणा भरी हँसीसे मुझे उत्साहित बनाओ। सफलता ! जा जा, जितनी दूर जा सकती है जा ! मुझसे भाग, मुझसे घृणा कर। यदि यह मनुष्य मनुष्य है, उसके सत्य को पकड़ सकती है तो तुझे भी वो संकट में बिछुड़ जाने वाली वेश्या जकड लायेगी ! मैं जाऊँगा, अवश्य जाऊँगा और अभी जाऊँगा।

(आना मोहनी का)

मोहनी—प्राणनाथ !

रणजीत—प्रिये ! मोहनी ! मैंने विवश होकर परदेश जाने का दृढ़ विचार कर लिया है।

मोहनी—हरि, हरि। नाथ ! क्या वह प्रभु जो जलचर जीवों को जल से, पवन पक्षियों को डाल पात से, भोजन खिलाता है, हम पर इस भाँति निर्दयी हो जायेगा ? नहीं, नहीं, मैं तुम्हें न जाने दूँगी; जिस परिश्रम से आप विदेश में

सुख को ढूँढ सकते हैं उसी प्रकार यहाँ भी उसे अपना सकते हैं।

रास्ते की तरह वक्त भी कटता जायगा।
ना मुरादोंका वरक खुदहा उलटता जायगा॥
कोह भी होगा तो मिस्ले काह हटता जायगा।
सहल होंगे मंजिलें पानी भी फटता जायगा॥
जिसका तालिब दिल है ईश्वर वह भी दिन दिखलायेगा।
काट लो धारा तो साहिल भी नज़र आजायेगा॥

रणजीत - विधाता! मेरे विवाहको अभी छः महीने भी पूरे नहीं हुये, कि इस मधुर मोहनी मोहनीको रोजगार की तंगीसे मैं छोड़े जाता हूँ। मोहनी, मोहनी! धर्म और संसार व्यवहार है वहाँ से धर्म दूर हो जाता है।

मोहनी—धर्म के लिये रामचन्द्रजी महाराज ने राजपाट को त्याग दिया तो तुम.....

रणजीत—मैं एक निर्बल संसारी पुरुष उनकी बराबरी कहाँ कर सकता हूँ?

मोहनी—अच्छा तो जैसा जानकीजी दुःख दर्द कष्ट और आराम में साथ रहीं, मुझे भी साथ रखो।

रणजीत—नहीं प्रिये, नहीं! जब मुझसे आज अपने कंधे पर पड़ा हुआ सर का बोझ भी उठाया नहीं जाता, तो तुम्हें मैं कहाँ लेकर फिरूँगा! सन्तोष रखो, जिस तरह यह नीले वर्ण आकाश पर चमकते हुये तारे जहाँ तुम आज देख रही हो कल भी इस समय फिर वहीं मौजूद होंगे, उसी तरह मैं भी आज तुमसे जुदा होता हूँ तो कल तुम्हारे पास ही हूँगा।

एक जरी सी बात में सारी तबाही जायगी।
राहे ना हम वार हमवारा पे आही जायगी॥

मोहनी—परन्तु नाथ ! मेरी एक और प्रार्थना है ?

रणजीत—कहो कहो, इससे पहले कि तुम्हें तनहा छोड़ जाने के सब कार्य एकत्रित हो जायँ, मैं तुम्हारी आशाओं को पूर्ण करूँगा ।

मोहनी—परन्तु आशा तो आपके जाने के साथ ही टूट जायगी ।

रणजीत—किसबात की आशा ?

मोहनी—जीवन की ।

रणजीत—मोहनी ! ऐसे कठोर वचन अपने मधुर होटों से न निकालो, कहो २ तुम क्या चाहती हो ?

मोहनी—आह ! धन धाम ऐश्वर्य सब कुछ खो गया परन्तु मुझे दुःख न हुआ । लेकिन अब तुमभी, मेरे सुखी जीवनके चन्द्रमा ! मुझे अन्धेरेमें ठोकरे खाने के लिये अकेली छोड़ कर जब लोप हुये जाते हो तो बताओ बताओ, तुम्हारे बाद मेरी रक्षा कौन करेगा ?

रणजीत—रक्षा ! प्राणप्यारी, जब रणजीत ने घर छोड़ने का दृढ़ विचार कर लिया तो पहले यह बात भी सोच ली थी कि तुम्हारी रक्षा करने वाला .....

मोहनी—कौन ?

रणजीत—इकराम !

मोहनी—क्या इकराम नौकर ?

रणजीत—हाँ मोहनी ! इकराम । क्यों ?

इकराम—(आकर) हुजूर ! आज यह क्या उदासी सी छा रही है ! जिधर देखो उधर घरकी सूरत काटने को दौड़ी आ रही है !

रणजीत—इकराम, अब मैं सफर को जा रहा हूँ।

इकराम—सफरको!

रणजीत—हाँ।

इकराम—क्यों?

रणजीत—इकराम! तू जानता है कि मैं तबाह हो गया. मेरे पास जो कुछ था, सब ख़तम हो गया।

इकराम—मगर हुजूर, फिर भी क्या हर्ज है—
जीते अगर रहेंगे तो और कमा लेंगे।
बिगड़ी हुई हालत को हर तौर बना लेंगे॥
ज़र मैल है हाथों का कूवत है तो सब कुछ है।
तुम जीते रहो मालिक हिम्मत है तो सब कुछ है॥

रणजीत—नहीं इकराम! यह केवल भ्रम है। मैं अगर चन्द दिन और यहाँ रहा तो यह छोटी सी झोपड़ी जो बची हुई नजर आ रही है, यह भी न रहेगी।

इकराम—नहीं मालिक, नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा।
बेच डालूँगा मैं अपने आपको बाज़ार में।
पर न इन आंखों से देखूँ आपको नाचार में॥
बेवफाई होगी जाहिर गर किसी फन से मेरे।
कोढ़ बनकर फूट निकलेगा नमक तन से मेरे॥

रणजीत—शाबाश, इकराम शाबाश! मगर फिर भी मुझे वतन छोड़ना ही पड़ेगा।

इकराम—साहब! क्या मेरी दरख्वास्त मंजूर न कीजियेगा?

रणजीत—कौनसी दरख्वास्त!

इकराम—यही कि मेरा घर, खेत, जर, नगद् सब आप का जो दिया हुआ है और आपही के लिये हाजिर है उसे

अपने काम में लाइये। इजाजत दीजिये कि आपका गुलाम आज मालिक के साथ हक़ नमक अदा करे।

मिन्नत कशे अलमथा पावन्द रंजो ग़म था।
बेकस था बेनवा था बेदाम बेदिरम था॥
मेहमान दो घड़ीका जाने हजीम दम था।
जिसने मुझे संभाला वो आपका करम था॥
जो कुछ दिया बहुत दिया हद से सिवा दिया।
मैं ख़ाक था हुजूर ने रुत्बा बढ़ा दिया॥

रणजीत—नहीं, इकराम नहीं। अगर वफादारी, जाँ-निसारी एक सच्चे मुसलमान नौकर का ईमान है तो दी हुई चीज़ को वापस न लेना भी एक सच्चे हिन्दू मालिक का धर्म है, देखा मोहनी! देखा, यह स्वामिभक्त भृत्य मेरे पश्चात् तुम्हारी रक्षा करने के निमित्त उपस्थित है।

मोहनी—एक अकेली हिन्दूस्त्री के पास मुसलमान नौकर का हर समय साथ रहना संसार में शक पैदा करेगा। भांति भांति के विचार लोगों में फैल जायंगे।

इकराम—नहीं, मोहनी माता! नहीं, वह समय गया और जाने वाला है। जब हिन्दू और मुसलमान कौम में आग पानी सा बैर था। अब तो वह दोनों कौमें मिलकर एक हिन्दी क़ौम कहलाती हैं।

अल्लाह नाम अपना अब राम ने रखा है।
और रामने घर अपने इस्लाम को रखा है॥
काशी में वही निकला काबे में जो रहता था।
ओझल जो नज़र से था अब सामने रक्खा है॥

रणजीत—मोहनी, मोहनी!

नाकूस ब्रह्मन से सदाये अजाँ सुनो।
मसजिद में आओ सैर करो सोमनाथ की॥

मोहनी—हां, प्राणनाथ! सुना।

रणजीत—तो इकराम! हमें उम्मीद है कि मेरे बाद तुम...

इकराम—बस हुजूर, बस। अब ज्यादा न कहिये, मैं अपना फर्ज बखूबी समझता हूँ।

साथ थे, सीता के भाई रामके औ मैं गुलाम।
वो थे पावन्दे अदब, औ मैं हूँ पावन्दे कलाम॥
मोहनी है मेरी मां, सीता था उनकी मां का नाम।
मैं हूँ एक नुजवे वफा, और वह वफादारी तमाम॥
हक़ गुज़ारे हक़ थे वह, और मैं हक़े महकूक हूँ॥
बन्दये खालिक थे वे, मैं खादिमे मखलूक हूँ॥

रणजीत—बस ट्रेन का वक्त हो गया, मुझे जाना चाहिये।

नाव डाला नीर में अब कृष्ण नाम अधार।
कृष्णही खेवन हारा मेरा, कृष्ण लगाये पार॥
काली किस्मत, काला मैं हूँ, काला मेरा यार।
काली रात है, काली की, औ करै वही उजियार॥

मोहनी—प्राणनाथ!

इकराम—मेरे मालिक!

मोहनी—इतना जल्दी!

रणजीत—नहीं मोहनी! अब मैं एक पल नहीं ठहर सकता, अच्छा इकराम! तुम सफ़र की तैय्यारी करो। मोहनी! संतोष और शान्ति रक्खो।

मोहनी—संतोष और शान्ति निराशा का दूसरा नाम है। आह! जब वसन्त ऋतु चमन का दिल बढ़ाने आयेगी चन्द्रमा आकाश की ज़रदोज़ी चादर पर इधर उधर तुम्हें

देखने के लिये मचलेगा, उस समय तुम-आह! तुम और तुम्हारी याद मुझे मार डालेगी।

गाना।

परदेश न छोड़के बालम जाओ।
यह प्रीति की तो रीति नहीं॥
मै तो प्रेम में सुध बुध हार गई—
तो यह श्याम सुन्दर परतीत नहीं।
कैसे धीरज राखूँ हे मोरे श्याम प्रीतमजी हे रसिया॥
प्राणपिया गर जाके बसो तुम सात समुन्दर पार।
डूबत डूबत तैर कें आऊँ लाख मिलें मझधार॥ ऐ०-
दर्शन को तेरे वन के पखेरू आऊँ सौ सौ वार।
नैन को तेरे चरण लगाऊं पंखजो दे किरतार॥

(रणजीत का चले जाना)

अंक पहला-सीन तीसरा

सरप्रताप का मकान।

(कामिनी का मय सहेलियों के गाना)

गाना।

सहे०—प्रबल प्रेम रस बदनी—मृगनैनी, सुध बुध कहां बिसराई।
स्यानी सलोनी मदन मद माती किसने तुझे भरमाई—
बहन, सुध बुध कहां बिसराई।
कामिनी—घर तज कर सखी सरोवर तट पर जलक्रीड़ा को आई।
सहे०—चम्पाकी शीतल छाया में ठाढ़े कुंअर कन्हाई॥
हर्ष हर्ष कर दरस परस कर लोचन प्यास बुझाई—
बहन, सुध बुध कहां बिसराई॥
का०—मग पूछन को रसिक भ्रमर के निकट गई मतवारी।
सहे०—लागे नैन छुपे नहीं चाहे लाख छिपाओ प्यारी—
क्यों बिगड़ी आंखें सजनी क्यों फूल वेनी बिखराई॥
बहन, सुध बुध कहां बिसराई॥

कामिनी—जाओ, जाओ, मुझे न सताओ, अफ़सोस! मेरी आशाओं का मोह भंग हो गया।

नज़र आता नहीं अब जीने का सामान कोई ।
हाथ अफ़सोस न निकला मेरा अरमान कोई ॥

१ सहेली—परन्तु तुम इतनी निराशा क्यों प्रगट करती हो ? ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारी सब आशायें पूरी हो जायंगी।

कामिनी—पूरी क्या खाक होगीं ! मेरे भाग्य ही फुटे हैं।

२ सहेली—भाग्य ! अरे तुम तो स्वयं एक जगत् की भाग्य हो ! भला ऐसा कौन अभागा होगा जो तुमसे प्रेम न करता होगा !

कामिनी—बस रहने दो, मेरे मनको और बेकल न करो।

(गाना गाकर सहेलियां का जाना)

गाना।

सहे०—*तेरी छवि चंद्रवदनी कामिनी, वसन्त ने चुराई ।*
वेला गेंदा गुलाब केतकी केशर कचनार कामदेवकी.
कमान मलय से मिली बयार की ।
तेरेही सुबास से सुगन्धि सबने पाई, कलियां सब-
मुसकुरायें—डाली तालियां बजायें ।

(सरप्रताप और अजीत दोनों का आना)

सरप्रताप—कामिनी, कामिनी !

कामिनी—जी पिता जी !

सरप्रताप—आज के समय जबकि तेरा बूढ़ा बाप सरप्रताप ६० वर्ष की अवस्था में जवानी की जिन्दगी बशर कर रहा हो तो तू भी उसका इन्तजार कर रही होगी-जबकि तू सुन्दर पति की पत्नी कहलाये। हाँ कामिनी, मोहनसिंह आज कल अपना विचार क्या प्रगट करता है !

कामिनी—पिताजी! कुछ दिन से तो परमात्मा जाने, उन्हें क्या हो गया है!

सरप्रताप—क्या वह तुझसे विवाह करना नहीं चाहता?

कामिनी—चाहते हैं।

सरप्रताप—क्या वह तुझसे प्रेम करना नहीं चाहता?

कामिनी—चाहते हैं!

सरप्रताप—फिर?

कामिनी—जब आते हैं दो चार इधर उधर की बातें करके ठन्ढी साँस भरते हैं और—

सरप्रताप—और क्या?

कामिनी—"हाय! मित्र, मैं तेरी कुछभी सेवा न कर सका!" यही कहते हैं।

सरप्रताप—मित्र? कौन मित्र? कैसा मित्र? इस सन्सार में अब तेरे सिवा उसे और किस मित्र की आवश्यकता है! धन भी है, प्रतिष्ठा भी है; तुझसी अति सुन्दर और मधुर मोहनी स्त्री भी है, और वह भी सरप्रताप की बेटी!

कामिनी—देखिये पिता जी! वही आते हैं।

सरप्रताप—अच्छा हम दूसरे कमरे में जाते हैं। और तू उसका अन्तिम विचार क्या है? किसी बहाने से पूछ ले और मुझे बता। क्योंकि मैं उसका शीघ्र न्याय करना चाहता हूँ।

मोहनसिंह—(आकर) अफसोस! जब सूर्य तारामण्डल से अप्रसन्न होकर पृथ्वी के पीछे छिपता है तो चन्द्रमा उसे ढूँढने निकलता है। जब महासागर से मेघ पानी लेकर पृथ्वी पर बरसाता है तो उससे मिलने के लिये सागर का जल उछल उछल कर पृथ्वी पर चढ़ आता है। मगर प्यारे मित्र रणजीत! तुम्हारा दोस्त तुमसे मिलने को नहीं आ सका।

कामिनी—मोहनसिंह ! तुम पागल की तरह यह क्या कहते हो ? व्यर्थ के बचन यह किसके सोगमें मेरे सामने प्रकट करते हो ?

मोहनसिंह—उसके सोग में जिसका प्रेम सूर्य्य की तरह मेरे हृदय के आकाश पर प्रकाशमान है। उसके वियोग में यह हृदय फटा पड़ता है जिसे सब कहते "दो क़ालिब और एक जान है"।

परेशानी में अपनी जन्मभूमि छोड़ कर निकला।
वह निर्धन मित्र लाचारी से मुँह को मोड़ कर निकला॥

कामिनी—मोहनसिंह ! यह तुम क्या कहते हो ? क्या कामिनी की प्रार्थना जरा भी नहीं सुनते हो ?

मोहनसिंह—इसलिये कि तुम सब अपना अपना स्वार्थ ढूँढ़ रहे हो।

कामिनी—कौन, हम ?

मोहनसिंह—हाँ ! तुम !

कामिनी—पहले तो तुमने मुझे अपने मोह के जाल में फँसाया। उस वक्त स्वार्थी कौन था ?

मोहनसिंह—मैं ! तुम ! यह सब प्रेमी संसार स्वार्थ के कारण एक दूसरे के बंधन हैं। मगर वह स्वार्थी नहीं था।

कामिनी—कौन ?

मोहनसिंह—रणजीत, गरीब, नाचार हमारे तनहा प्रेम का अभिलाषी।

कामिनी—तो वह प्रेम जो तुमने मेरे लिये रक्खा था, उसे दे दिया ?

मोहनसिंह—मेरे पास प्रेम ही कहाँ था ? होता तो सब से पहले उसे देता। नहीं नहीं, प्रेम है। मगर निकम्मे

मनके अन्दर सड़ रहा है। पश्चात्ताप उसे धक्के दे देकर बाहर निकाल रहा है।

कामिनी—मगर ?

मोहनसिंह—मगर वह रणजीत के इन्तज़ार में है, बाहर नहीं निकलता।

कामिनी—अच्छा तो फिर मुझे उत्तर दो !

मोहनसिंह—मैं तुम्हें अनेक उत्तर दे चुका।

कामिनी—मेरे मनको निराश न करो।

मोहनसिंह—मैं मजबूर हूँ।

कामिनी—फिर भी ?

मोहनसिंह—मैं लाचार हूँ।

कामिनी—प्रेम !

मोहनसिंह—उसी को ढूँढ़ रहा हूँ।

कामिनी—वचन ?

मोहनसिंह—उसी ने मार रक्खा है।

कामिनी—तो अब मैं ?

मोहनसिंह—बस सन्तोष। जैसे एक विधवा स्त्री अपने पति के मर जाने पर संतोष रखती है, वैसेही मेरे सख्ती के बर्तावों को क्षमा के विचार से भूल जाओ। जैसे एक धर्मात्मा और नीतिज्ञ मालिक अपने नौकर की भूल को भूल जाता है वैसे ही तुम भी मेरे किये कार्यों को विसारने के लिये अपने हृदय को दयावान बनाओ। यद्यपि ये मन और नेत्र तेरे दास हैं, यह नेत्र स्वरूप के खज़ाने का पहरेदार हैं ! ये हाथ और पाँव तेरे ख़िदमतगार हैं, तथापि इस समय तेरा प्रेम मुझे अस्वीकार है, मानों यह प्रेम पुकार में उसी प्रकार सेवा करने के लिये हर वक्त खड़ा है, जैसे श्रीरामचन्द्रजी

के द्वार पर खड़ा मारुती अपना फर्ज पूरा कर रहा है। बस अब मैं जाता हूँ।

[जाना]

कामिनी—आह ! निर्दयी ! तू ने मेरे साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया। मुझे हिमालय रूपी प्रेम के शिखर पर चढ़ाकर अपनी कठारता की ठोकर से एक दम अंधेरे ग़ार में गिरा दिया।

सरप्रताप – (आकर) उसने क्या जवाब दिया ?

कामिनी—पिता जी !

सरप्रताप—कामिनी ! मैं पूछता हूँ, उसने क्या कहा ?

कामिनी—क्या कहूँ ?

सरप्रताप—क्या तेरा अपमान कर गया ?

कामिनी—नहीं।

सरप्रताप—फिर ?

अजीत—(आकर) फिर क्या, वह बड़ा अभिमानी है !

सरप्रताप—अभिमानी है ? जब तो मैं उसका नाम भी कामिनी को न लेने दूँगा। उसके नाम लेने के लिये जबान भी न खोलने दूँगा।

कामिनी—नहीं, पिताजी नहीं, वह समझ जायेंगे।

सरप्रताप—समझ जायेगा, कब ? जब कि तेरे बाल सुफ़ैद हो जायेंगे, जवानी के बाग़ की लतायें झुक कर जमीन पर आ जायंगी ? आह ! मोहनसिंह ! क्या तू सरप्रताप को कोई मामूली आदमी समझता है ! मूर्ख ! मेरा नहीं तो देवताओं का, मेरा नहीं तो एक हिन्दू अबला के दुखी मन का शाप तुझे ...

कामिनी—पिता जी ! पिता जी ! बस कीजिये—इसके आगे मैं और सुनना नहीं चाहती।

सरप्रताप—क्यों ! क्या ऐसे अधर्मी को शिक्षा मिलनी न चाहिये ! ऐसे कृतघ्न काम करने वाले को बिना दण्ड दिये छोड़ देना चाहिये ! नहीं, उसे अवश्य उसके पापका प्रतिफल चखाना चाहिये, ताकि वह आर्य्यभूमि की दूसरी अबला कन्याओं को भी इसी तरह दुराचारी से बहकाने का साहस न करे।

कामिनी—पिता जी ! आप क्रोध में मेरी हानि कर रहे हैं।

(जाना)

सरप्रताप—तेरी हानि कर रहा हूँ ! जा जा, निर्लज्ज ! यहाँ से चलीजा।

अजीत—क्षमा कीजिये।

सरप्रताप—क्षमा ! इन लोगों के लिये नहीं बनायी गई है।

अजीत—नहीं, क्षमा दुष्टजीवों और पापियों के लिये ही बनायी गई है। सरप्रताप ! जिह्वा चर्म की एक कटारी है, जो लोगों के दिलको चीरती और पत्थर की छाती पर घाव करती है। ख़ैर इस ध्यान को मनसे हटाओ और सुनो, रणजीत को घर छोड़े हुये मुद्दत हुई। मोहनी फ़ाका कर रही है, उसकी आंखें तुम्हारे धनकी तरफ लगी हुई हैं। आह ! आह ! मोहनी वह सुन्दरता की देवी है जिसकी पूजा करने के लिये मैं अपनी आशाओं की सामग्री को लिये हर समय तय्यार हूँ।

सरप्रताप—बस अजीत ! बस ! तू मेरा एक पुराना मित्र है, कामिनी अब मोहनसिंह के बदले तुझसे ब्याही जायगी।

(कुर्सी पर बैठकर घण्टी बजाना, अन्दर से बाँय का शराब लेकर आना) क्यों ?

अजीत—मैं इस उपकार का आभारी हूँ ! मगर ...

सरप्रताप—मगर तो क्या तेरे मनमें कामिनी के लिये कोई शंका पैदा हुई है ? क्या मोहनसिंह की तरफ़ से कोई संशय है ?देखो जब तक सरप्रताप का बूढ़ा सर हिमालय की बरफानी चोटी की तरह सफेदी का घूँघट पहने इस पृथ्वी पर प्रतिष्ठा के अहंकार से ऊँचा है, तब तक तुझे किसी का भय नहीं।

अजीत—भय तो नहीं है, परन्तु कामिनी को मेरे साथ ब्याह देने से पहले आप अपने उजड़े हुए घर को फिर से बसाइये।

सरप्रताप—(हँसना) हा ! हा ! हा ! किस दिन के लिये, अब कि मैं साठ वर्ष की अवस्था को पहुँच गया हूँ साठ सर्दी और साठ गर्मियों का मौसिम मुझसे विदा हो चुका, फिर किस समय के लिये ब्याह करूँ? अजीतसिंह ! कुछ सोच समझकर बोलो। हा ! हा ! हा !

अजीत—मैं सोच समझ कर ही बात कर रहा हूँ। लो यह एक जाम नई दुल्हन के आमदको खुशी में हाथ बटाओ !

सरप्रताप – (शराब पीकर) अगर यह बात है तो फिर तुझे अख्तियार है।

अजीत—हाँ यह काम मुझ से ही होगा और मैं ही उसे ठीक करूँगा ?

सहेलियाँ— गाना।

सागर छलके बल्कि बादल से मेह बरसे मयका।
रंगीले रसीले जाम भर भर पियो पियो ॥

हो आली हुक्काम तुम सरदार सदा जियो जियो।
हर बिध से हर दम गुलफाम बार बार वे शुमार।
तू जियो सदा ॥ सागर०—

अंकपहला-सीनचौथा

(चम्पा का गाते हुये आना)

चम्पा— गाना।

यौवन मदमाती जाती ये जवानी प्यारी वारी वारी मैं।
प्रीतिभर प्रेम सदा रस पावो, विरहन के विहारी झट आओ॥
लियर डियर पर वारी वारी वारी मैं॥
प्रेमकी बात मुझसे नहीं छिपाई जाय-खिले हैं ये फूल पात,
कामदेव की सौगात।
रसिक बलिहारी ये मनमथ पै वारी २ वारी मैं॥

मोहन—(आकर) छि. छी, छूम, छा!
चम्पा—कौन, मेरा प्यारा मोहन बेकरार?
मोहन—कहो सरकार, कैसो हो! तबीयत तो अच्छी है

चम्पा—क्या कहूँ मेरे दिल की घड़ी तो तुम्हारे नाम की तरह हर वक्त बेकरार रहती है। क्योंकि आपके घड़ी घड़ी के वादे से मेरी घड़ी में हर घण्टे के हर मिनट पर दोनों सूइयां आपस में मिलने का इन्तजार करती हैं।

मोहन—क्यों क्यों, कोई कारण ?

चम्पा—पिताजी ने उसे उल्टी चाभी दे रखी है।

मोहन-आखिर कुछ वक्त भी देखाती है ?

चम्पा-हाँ; तीन का तेरह बजाती है।

मोहन-बस बस मैं समझ गया, यह सब तुम्हारे अब्बा जान की शरारत है। उन्हीं हजरत की करामात है। वह मेरे साथ तुम्हारी शादी करना नहीं चाहते। खाना बरबादी आबादी करना नहीं चाहते। क्यों है न यही बहाना !

चम्पा-नहीं, वह तो कहते हैं कि तुम्हारा चाहने वाला है जनाना ?

मोहन—क्या जनाना ? मैं और जनाना, चंचल चाल है, लटक मटक और कमर में नाज का झटका पटका, हुस्न का पौडर चेहरे पर, गाल गुलाबी, आँखें नसीली, रसीली, लटका, मटका, झटका; अहा ! हा ; चहे. ! छूम, ! चहा !

चम्पा—खुदा की मार, इसी लटके मटके ने ही तो मुझे कहीं का नहीं रखा !

(जाना दोनों का और आना बेखबर और मुर्ग़ाबी का)

बेख़बर—इधर आ ! वाक़यी तू नौकर रहना चाहता है ?

मुर्ग़ाबी—जी हुजूर !

बेख़बर—तेरा नाम ?

मुर्ग़ाबी—मुर्ग़ाबी।

बेख़बर—क्या मुर्ग़ाबी, कमबख्त घरमें बैठकर अण्डे तो नहीं दिया करेगा ! अच्छा तेरा खानदान ?

मुर्ग़ाबी—नव्वाबी ।

बेख़बर—वाक़यी, मज़हब ?

मुर्ग़ाबी—रकाबी

बेख़बर—अबे ! क्या बकता है ? वाक़यी नाम मुर्ग़ाबी ?

मुर्ग़ाबी—जी ।

बेख़बर—खानदान नवाबी ?

मुर्ग़ाबी—जी ।

बेख़बर—मज़हब रकाबी ?

मुर्ग़ाबी—जी !

बेख़बर—और काम क्या करेगा ?

मुर्ग़ाबी—आप सिर्फ मेरे खाने और कपड़े का इन्तजाम कर दीजिये । फिर मुझसे जो चाहे काम लीजिये ।

बेख़बर—अच्छा ! तू घर में जा, मैं अभी आता हूँ ।

मुर्ग़ाबी—बहुत खूब ।

(मुर्ग़ाबी का जाना और मोहन उर्फ मनछुच्छू का आना)

मोहन—छि, छि, छूम, छा ।

बेख़बर—कौन ? मनछुच्छू तू !

मोहन—ससुरे साहब ! आप मुझे मनछुच्छू क्यों कहते हैं ? मेरा नाम तो मोहन बेकरार है ।

बेख़बर—अबे, ससुरे ! मैं तुझे मनछुच्छू इसलिये कहता हूँ कि तेरा न औरतों में ठिकाना है और न मर्दों में शुमार है ।

मोहन—ऐ, मुये, क्यों बदमआश मेरी उठती जवानी में

दाग लगाता है? बातों में उड़ाता है। मैं तो हर कमाल में फ़र्द हूँ। अच्छा, खासा मर्द हूँ।

बेख़बर—तो फिर क्या इरादा है?

मोहन—वही शादी!

बेख़बर—किसके साथ?

मोहन-चम्पा के साथ।

बेख़बर—क्या वाक़यी?

मोहन—वाक़यी।

बेख़बर—नहीं! हरगिज़ नहीं। मैं अपनी हसीन और काबिल बेटी को तुझ जैसे मुफलिस और भिखारी के पल्ले कभी न बाँधूगा। और जो दूँगा, तो किसी मालदार को दूँगा।

मोहन-ऐ वाह। हक़दार तरसे और इनकार है बरसे।

बेख़बर—बस ज्यादा बकबक न कर, निकल जा मेरे घर से।

मोहन-हट्ट, तेरा मुर्दा गाड़ूँ, तुझे रोऊँ, तुझे पोटूँ। मुवा खूसट, जबान देकर बदल गया। मालदार देख कर फिसल गया। छि, छि, छूम, छा।

(चम्पा और उसकी माँ चपला का आना)

चपला—ऐं यह क्या हो रहा है? मोहन बेक़रार क्यों रो रहा है?

बेख़बर-अजी कुछ नहीं, यह बदमाश ख़्वामख़ाह गले पड़ता है।

चपला-आखिर बात क्या है?

बेख़बर-मैं इसे अपनी लड़की देना नहीं चाहता। बस

फैसला हो चुका। घर चलो, लड़की! मैंने क्या कहा? तू ने सुना?

चम्पा—उँ हुँ।

मोहन—छि, छि, छूम छा!

बेख़बर—वाक़यी, अच्छा अच्छा, मैं तुझसे समझ लूँगा।

(जाना]

मोहन—अरे जा मुये!

चम्पा—क्यों? मैंने अब्बाजान को कैसा लज्जित किया?

मोहन—ऐं! मैं कुरबान! छि, छि, छूम छा!

अंक पहिला-सीन पाँचवाँ

सुनहरी कान

(अगल बगल मजदूर लोग खड़े हैं, और बीच में रणजीत उदास खड़ा है)

रणजीत—हरि! हरि! भगवान! तेरी लीला अपरंपार है यहाँ सोने की कान का ठेका लिया, पर्वत की कन्दरा खोदते २ मेरे मज़दूर हार गये। मगर सोने का एक कंकड़ भी न मिला। हाय! मोहनी! मेरा इन्तज़ार करती होगी। इक़राम

गेरा मुसलमान नौकर मोहनी की सेवा करते करते थक गया होगा !

उस तरफ है दुःख का सागर रंजधारा इस तरफ़ ।
मोहके आधिन, उधर और ग़म का मारा इस तरफ ॥
कृष्ण आओ थाम लो कर इस निराशे दास का ।
थाह लगताही नहीं इस कष्ट के आभास का ॥

१ मज़दूर—रणजीतसिंह साहब !

रणजीत—क्यों भाइयो, क्या है ?

२ मज़दूर—आपके दो महीने का ठाका ख़तम हुआ, । अब हम चार सौ मज़दूर काम नहीं करेंगे ।

रणजीत—भाइयों । मैं अभागा जिस कदर रुपया साथ लाया था तुम्हें दे चुका । दो महीने तुम लोगों ने इस पर्वत को खोदा, मगर सोने की कान तो क्या उसका निशान तक न पाया । अब तुम लोग क्या कहना चाहते हो ?

३ मज़दूर—यही कि, हम चार सौ आदमियों की मज़दूरी आख़िरी आठ रोज की जो तुम्हारे ज़िम्मे है दे दो ।

रणजीत—भाई । मेरे पास तो, अब एक पैसा भी नहीं है जो तुम लोगों को दूँ या खुद ही एक वक्त का खाना मँगाऊँ ।

१ मज़दूर—तो इसके लिये हम क्या करें ?

रात दिन की है मशक्कत् हमने पत्थर तोड़ कर ।
किस तरह अब जांय हम, मिहनत का पैसा छोड़ कर ॥

२ मजदूर—पड़ गये किस्मत पर पत्थर आप की हम क्या करें ।
और ख़िदमत इससे बढ़कर आपकी हम क्या करें ॥

३ मज़दूर—किस क़दर झाँके कुयें मिहनत पर पानी फिर गया ।
या मुक़द्दर कर ख्याले, मेहरवानी फिर गया ॥

रणजीत—सच है, सच है, मगर भाइयो ! अब तो रणजीत के पास सिवाय इन वस्त्रों के और कुछ नहीं रहा। आप लोग भी मेरे हिन्दुस्तानी भाई हैं. अतः मुझे आशा है कि मुझपर दया करेंगे।

१ मजदूर—लो, हिन्दुस्तानी भाई दया करेंगे ! साहब। हमतो सिर्फ मिहनत मजूरी करने के लिये हा देश को छोड़ कर यहां आये हैं। मगर तुम तो माल व पूंजी साथ लाकर, सोने की कान खोदवा कर बड़े मालदार बनने आये थे।

२ मजदूर-जब हम ग़रीबों पर हिन्दुस्तानी भाइयों ने दया नहीं की, और हम देश परदेश मारे मारे फिरते हैं तो हमसे तुम्हें क्या उम्मीद है ?

३ मजदूर—बस लाओ पैसे चुकाओ।

रणजीत—आह, विधाता ! इतना विलम्ब क्यों ? धाओ २ भक्तवत्सल परमात्मा ! धाओ-दीनों के रक्षक भवभयभंजन मेरे कष्ट निवारण को आओ ! प्रभो ! आज्ञा दो कि शीघ्र आपका कालदूत आये और मुझ अभागे रणजीत की आत्माको परलोक के सुख और शान्ति का मार्ग दिखाने का सन्देशा पहुँचाये। हे यशोदा के लाल कृष्ण भगवान ! आप तो भगवद्गीता में अपने भक्तों से प्रतिज्ञा करते हो कि हम धार्मिकों के कष्ट और विपत के समय सहायता के लिये बार बार दर्शन देंगे। नाथ ! फिर विलम्ब क्यों लगाया ? किस कारण मेरी सुधि बिसराया ?

केहि कारण तुम देर की, कुंज बिहारी आज।
क्यों बिसरायो दास को, वेगि संभारो काज॥

१ मजदूर—फिर तुम क्या उत्तर देते हो ?

रणजीत—भाइयो ! मैं हाजिर हूँ। अगर कोई लेता हो

तो मुझे बेच डालो। अगर मेरी मृत्यु से तुम्हें लाभ मिलता हो तो मुझे मार कर अपना काम निकालो—

देह बनी मिट्टी की गाड़ी, पाँच तत्त्व हैं घोड़े।
यमकी बाट पैं सरपट दौड़े, खाकर लोभ के कोड़े॥
अन्त समय इस द्वार ही ठहरे, होकर अती अधीरे।
कृष्णही प्यारे आकर मेरे टूटे भाग को जोड़े॥

२ मजदूर—अरे यह तो हमें धर्मशास्त्र समझाता है! हम कुछ पूछते हैं और यह कुछ सुनाता है। सुनो महाराज! बहुत बातें बना चुके, अब सीधी तरह हमारी मजदूरी के रुपये दे दो, वरना कपड़े उतार लेंगे।

रणजीत—उतार लो, उतार लो, भाई! आखिर तुम कौन हो! मेरी आर्य्यभूमि के पुत्र! फिर यदि अपने भाई के वस्त्र तो क्या अगर उसकी देह से प्राण भी निकाल लोगे तो यह तुम्हारा बन्धु साथ देने को तय्यार है, अपने हरेक रोंगटे से तुम्हारी खिदमत करना उसे स्वीकार है

३ मजदूर—वाह, अरे! व्यौपारी भी है, धर्मी भी है। अच्छा तो चलो कपड़े उतार दो।

नूरुद्दीन—नहीं नहीं, ऐसा न करो, अब इसके पास कुछ नहीं है।

रणजीत—नहीं नहीं, लो। अगर यह वस्त्र भी तुम्हारे काम आता हो तो इसे अवश्य ले लो। क्योंकि तुम्हारे देन ने मुझे लाचार कर दिया।

सब मजदूर—तो लाओ उतार दो।

रणजीत—परन्तु भाइयो! एक अन्तिम इच्छा मेरी पूरी कर दो तो तुम्हारा अभिलाषी रणजीत, उसकी हिन्दू मुसल-

मान कौम, उसका हिन्दुस्तान देश, तुम्हारा आभारी रहेगा।

सब—क्या?

रणजीत—एक फटी पुरानी धोती, एक पानी का कटोरा और एक फावुवा मुझे यह समझ कर दे दो, कि एक हिन्दुस्तानी भाई मर गया और उसकी चिता में जलाने के लिये कफन अर्थी के बदले यह चीजें धर्मार्थ देवीं।

२ मज़दूर—अरे वाह! धोती रोटी कटोरा और फावुवा इतनी चीजें माँगता है! तो यों क्यों नहीं कहता कि तुझसे पैसा माँग कर हिन्दुस्तान जाने का किराया ही जमा करदें!

रणजीत—नहीं भाई, नहीं, मैं यह मुंह लेकर हिन्दुस्तान जाना नहीं चाहता। फटी पुरानी धोती अंग ढाँकने के लिये पानी का कटोरा इस दुःख रूपी निद्रा में जीवनयात्रा पूरी करने के लिये, और फावुवा एक फूटे हुए भाग्य को फोड़ने के लिये।

नूरुद्दीन—अच्छा मैं दूँगा।

मजदूर—तू देगा, तू देगा, बड़ा साहूकार का बेटा बना है देने वाला!

१ नूरुद्दीन—अरे शर्म करो, शर्म! अपनी नहीं, इसकी नहीं तो हिन्दवासी होने की शर्म करो। तुम्हारा एक हिन्दुस्तानी भाई यहाँ तबाह हो जाये, अपना रुपया पैसा तुम्हें दो दो महीने तक खिलाये, आखिर तुम्हारे आगे रहम की दरख्वास्त कर के गिड़गिड़ाये और तुम्हें उसकी ठट्ठा उड़ाते शर्म भी न आये? लानत है तुम लोगों पर कि एक अपने भाई का यों मजहका उड़ा कर दूसरी कौमों पर तुम तन मन धन से निसार हो जाओ और अपने कौम को ज़लील बनाकर पैरों से ठुकराओ। जाओ जाओ, अगर हिन्दुस्तान का पानी ऐसा ही

शोर और खार है, अगर हिन्दुस्तान की हवा ऐसी ही बेवफ़ा है तो तुम्हें हिन्दुस्तानी कहलाते हुये शर्म और फिटकार है। साहब ! तुम क्या चाहते हो ? यह ग़रीब मुसलमान भाई और उसका रोवाँ रोवाँ तुम्हारी मदद करने के लिये तैयार है।

है कयामत सर पर एक महशर बपा होने को है।
हिन्दुओं के हाथ से हिन्दी तबाह होने को है॥
हिन्दवाले रह सकेंगे, इनको सुनकर होश में।
वह हरारत वह लहू है जो न आये जोश में॥

३ मजदूर—तू तैयार है ? मगर यह तो मरने का सामान जमा कर रहा है !

नूरुद्दीन—कुछ भी हो। मैं तो जरूर इसकी सहायता करूंगा।

सब—क्या हुआ ! पर हम जरूर इसके कपड़े उतारेंगे।

नूरुद्दीन—उतार लो, उतार लो, परवाह नहीं। ले भाई, यह मेरे सर का साफा ले। इसे खोलकर धोती बना। यह फाडुआ और कटोरा ले। मैं शहर में जाकर तेरे लिये कुछ फल मेवा लाता हूँ। जब मादरे हिन्द की गोद में हम दोनों ने परवरिश पाई है तो आज से तू ग़ैर नहीं मेरा भाई है।

सब—लाओ कपड़े उतार दो।

नूरुद्दीन—अरे शर्म करो, शर्म करो ! ऐ मुहज्जब दुनिया और खास करके हिन्दुस्तान के बत्तीस करोड़ बच्चों, बूढ़ों जवानों और औरतों ! इन बेशर्मों पर लानत भेजो।

सब-बस चुप रहो, कपड़े उतारदो, हम कुछ नहीं जानते हैं।

रणजीत—भगवान ! दया, दया !

टेबला

अंक पहला-सीन छठवाँ

बेख़बर का मकान।

(आगे २ बदलू और पीछे २ बेखबर का आना)

बदलूप्रसाद—लोग कहते हैं कि दुनिया बड़ी रजील है। इसके शिकंजे में न फँसो और मैं कहता हूँ कि ऐ नसीहत करने वालो! अगर तुम शरीफ हो तो पहिले आईने में अपनी अपनी सूरत देखो, मगर दुनिया पर न हँसो। क्योंकि जो लोग इस ज़मीन पर बसते हैं और दुनिया पर हँसते हैं, मेरा तजरुबा है, अक्सर वही इसके शिकंजे में फँसते हैं।

बेख़बर-वाकयी मेरे दोस्त, वाकयी।

दुनिया की हँसी करते हैं जो तानकर सीने।
वह लाख शराफत करें जाहिर में हैं कमीने॥

बदलूप्रसाद-भाई। बेख़बर। सच तो यह है कि मैं इस दुरंगी दुनियाँ में आके लोगों से मेल जोल बढ़ाके सख्त घबरा रहा हूँ, अपनी भूल पर पछता रहा हूँ।

बेख़बर—क्यों?

बदलूप्रसाद—इसलिये कि दुनियावालों में शराफत की बू नहीं।

बेख़बर—वाक़यी।

बदलूप्रसाद—और फिर उस पर तुर्रा यह है कि जिसके साथ शराफतसे पेश आओ वही आस्तीन चढ़ाकर, आंखे दिखला कर कहता है कि आज मैं नहीं या तू नहीं।

बेख़बर--वाक़यी।

बदलूप्रसाद—क़सम है, आत्मा और परमात्मा की! अगर मैं यह जानता कि दुनिया दरिन्दोंका मुक़ाम है, जिसमें हर एक इनसान शराफ़त का दुश्मन और मतलब का ग़ुलाम है तो दुनिया को दूरसे ही सलाम कर लेता। आप अपना इन्तज़ाम कर लेता। माता जी के शिकम से कभी बाहर न आता। आता भी था तो वापस हो जाता और हमेशा के लिये आंखें मूँद कर सो जाता।

बेख़बर—वाक़यी दोस्त! मेरा भी यही ख़्याल है लेकिन अब तो यह बात होना मुहाल है।

बदलूप्रसाद--मुहाल है, तो अब कहो हम क्या करें? पेट से डरें या लोगों से डरें!

बेख़बर—अरे यार! तू ख़्वामख़्वाह शराफ़त को रोता है। सुन; जिस रोज़ हम ख़ुशामद के ज़रिये मालदार हो जाँयगे। अच्छे से अच्छे शरीफ भी ख़ुदा को भी भूल कर हमारी ख़ुशामद करने को तय्यार हो जायँगे।

कहते हैं सब रजील हमें, इसका ग़म नहीं।
कहने दे क्योंकि हम हैं ग़रीब अहले ज़र नहीं॥
ज़रदार जब बनेंगे, शरीफों में होगा नाम।
ताज़ीम से शरीफ करेंगे हमें सलाम॥

बदलूप्रसाद—वाह! वाह! वाह!

[जाना दोनों का]

अंक पहला-सीन सातवाँ

मोहनी का मकान।

गाना।

मोहनी—

प्रीतम नहीं आत-पीड़ा नहीं जात, सहकर विरह ताप सूखे गात ॥ प्री०
उन बिन नाहीं भात-सुखकी कोई बात, बितत ना दिन कटत ना रात ॥ प्री०

(एक पोस्टमैन का अख़बार लाकर देना)

पोस्टमैन— बाई साहब। यह आपका पेपर है

मोहनी—(पेपर पढ़ती है) आस्ट्रेलिया डेटेड फिफ्त जुलाई दी डेथ आफ एन् इंडियन कन्टरेक्टर एट कोलगार्डन—इज रिपोर्टेड ही फेल्ड ट्र ट्रेस, दी गोल्ड आफटर ए हार्ड ट्रायल फॉर टू मन्थज्, हिज नेमवाज रणजीत !

हा विधाता, मैं मर गई, निराशा मेरे मन की आशाओं का नाश करगई! रणजीत, तेरी आत्मा अप्सराओंके मण्डल में शान्तिके साथ मृत्यु लोकके दुःखों से निकल कर मुक्तधामका सुख भोग रही है, परन्तु यह अभागिनी मोहनी तेरे वियोग में जीते जी मृत्यु का दुःख उठा रही है। आह! आशायें रोती हैं। कामनायें शोक मनाती हैं! आह! तू एक मात्र सुख लेने को गया और ऐसा गया कि सूरज पूरब से पश्चिम तक ढूँढता फिरता है। चन्द्रमा हर रात्रिको नये घर में देखने जाता है, किन्तु तू कहीं

नहीं मिलता। रणजीत! तू मुझे दिलासा देकर सुख और शान्ति से गया था। मैं इन्तजार कर रही हूँ। आ आ—हैं, मोहनी! तू किससे बातें कर रही है? क्या बावली होगई है! उतार उतार, इन रंगे हुये वस्त्रों को उतार। क्योंकि तुझे सोहागिन देखने वाली आँखें बन्द और बेनूर हो गई हैं। यह चूड़ियां फोड़ दे, इन्हीं को देखकर तुझे लोग ब्याहता समझते हैं। जाओ, जाओ, ऐ गये हुये दिनों की याद दिलाने वाली सखियों! रणजीत के साथ तुम भी बिछुड़ रही हो तो जाओ, अभी चली जाओ! उनका तुम्हारा और इन सब सुखों का प्रेम झूठा था। आह—

अकेले चल दिये क्या नाथ तुम सारे वचन भूले।
लिया परलोक का रस्ता अजब राहे वतन भूले॥
तुम्हारे विरह में दासी की अबतो जान जाती है।
ज़रा ठहरो मुसाफिर एक अबला साथ आती है॥

इकराम—(आकर) क्या है, क्या है?

मोहनी—इकराम, मेरे सच्चे धर्मी सेवक! मैं बेवा होगयी। रणजीत हमें धोखा दे गया।

इकराम—आह खुदा, यह मैं क्या सुन रहा हूँ!

मोहनी—यह देखो, यह अखबार उनकी मृत्यु का समाचार देता है।

इकराम—हाय, अफसोस!

मोहनी—विधाता काल ने मेरा ये प्राणाधार छीना है।
मैं रोती रह गई मुझसे मेरा संसार छीना है॥

इकराम—सब्र करो माताजी, सब्र करो। अल्लाह की यही मरज़ी थी। इसमें आपका और मेरा बस क्या चल सकता है। बड़े बड़े, सूरमा सिपाही, बड़े बड़े खानदान शाही।

बड़ेही दाता बड़ेही दानी बड़े अमीराना दारगाही ॥
अजल की आतिश में जल गये सब, गुरूर सबले गयी तबाही।
न कुछ रहा है न कुछ रहेगा, सभी यहाँ हैं अदम के राही ॥
चमकता था कोहनूर जिनके, तिलायी ताजों में मेहर बनके।
निशान मिलते नहीं हैं कुछ भी अन्धेरी कब्रों में उनके तनके ॥

मोहनी—इकराम! शान्ति उन्हीं प्राणियों के लिये है जो संसार की प्रेमशक्तियों का प्राप्त कर चुके हैं, मोहनी ग्लासगो यूनिवर्सिटी की बी० ए० की डीगरी पास करके भी सन्तोष शास्त्र की विद्या का एक शब्द भी नहीं पढ़ सकी। हाय! इकराम! अब मैं क्या करूँ?

इकराम—माता जी! सुनो, मेरे पास जो कुछ पूँजी थी, वह मैंने आपकी ख़िदमत में सर्फ़ कर दी। अब यह मेरी मरहूम बीबी की निशानी हार मेरे पास है। इसे बेच कर सरकारी महकमे में तार भेज कर अपने मालिक के मरने जीने की सच्ची ख़बर मँगवाता हूँ।

(जाना)

मोहनी-भगवान। इसकी हिम्मत, इसकी आशाओं को पूर्ण कर आज! भयानक मकान, यह सूनसान स्थान, उसमें जवानी की उमंगों से भरपूर एक अबला; एक प्रेमरस की प्यासी माता होने से पहिले विधवा हो गयी। हे परमात्मा! तू सर्व शक्तिमान है, तू दयालु है, फिर क्या हुआ, क्यों मुझे बेमौत मार डाला; मैंने कौन सा पाप किया था, मैंने ऐसे कौन से सुख भोगे थे जिनके लिये आज इतना बड़ा बलिदान देना पड़ा? कठोर हृदय भगवान! मैंने तेरी पृथ्वी पर, तेरे आकाशके नीचे एक भी सुख नहीं पाया। हे भारतमाता! तुमने! हाँ, हाँ तुमने, मेरे स्वामी को विदेशी बना दिया।

तुम्हारी गोदमें लाखों दीन दुःखी कंगाल दो वक्त नहीं तो एक वक्त, अच्छा नहीं तो बुरा जरूर खाते हैं, किन्तु तुमने उसे एक मुट्ठी अन्न भी देने का दिलासा न दिया। लाओ लाओ माता! लाओ, मेरे रूठजाने वाले सुहाग को मुझे दे दो, मेरे फूटे भाग का जोड़ दो. मेरे उजड़े सौभाग्य का शृङ्गार करदो अभी लूँगी, इसी समय लूँगी, अन्यथा प्राण त्याग दूँगी, अपने जले मन से श्राप दे दूँगी।

(भारतमाता प्रकट होती हैं)

भारत० —शान्त, शान्त। बेटी, वह आयेगा, जरूर आयेगा-
गया है गैर जाति में मेरा वो नाम फैलाने।
मिलेंगे जल्द मेरे पुत्र अब संसार में स्याने॥
सदा अल्लाहो अकबर की सदा गूँजेगी मंदिर में।
जनेऊ में पिरोए जायँगे तसबीह के दाने॥

मोहनी—वह आयेगा, आयेगा, माता कब आयेगा?

(कलियुग का ज़ाहिर होना)

कलियुग—भूल करती है मोहनी! धोखा खा रही है! भला कहीं गये हुये भी उस सूरत में लौट सकते हैं? वह दूसरा जन्म अवश्य लेगा, किन्तु उससे तुझे क्या लाभ होगा?

मोहनी—क्या वह सदा की नींद में सो गया? क्या उसकी आत्मा ने शरीर का सम्बन्ध छोड़ दिया?

कलियुग—हाँ, हाँ उसकी आत्मा सुख भोगने चली गयी।

मोहनी—और मैं? यह मोहिनी उसकी अर्धांगिनी?

कलियुग—तू भी अपना सुख ढूँढ़।

मोहनी—सुख ढूँढूँ? और स्वामी की मृत्यु के पश्चात?

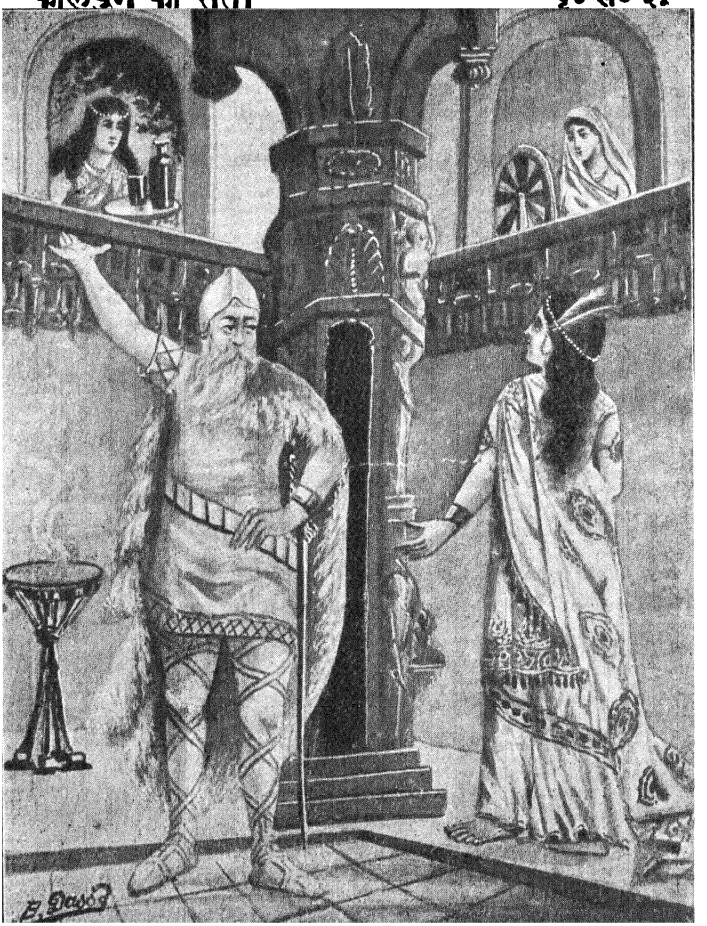

" सोनका ट्रान्सफर होना—एक तरफ एक औरत का चरखा कातते और एक का आनन्द भोग करने दिखाई देना ।"

कलियुग—तू ने जीवन भर उसका साथ दिया। वह खुद तुझे छोड़ गया। अब तू किस आशा पर उसके लिये दुःख झेल रही है? उठ, और अपनी मरी हुई आशाओं को नया जन्म दे।

मोहनी—नहीं, नहीं, एक हिन्दूस्त्री स्वतन्त्र रहने के लिये नहीं बनायी गयी है।

कलियुग—यह तेरी भूल है। क्या स्त्री के पास पुरुष की तरह दिल नहीं? क्या स्त्री के शरीर में वह आत्मा नहीं होती? जिससे मनुष्य सदैव सुख के लिये लालायित रहता है? देख, इधर देख!

(सीन का ट्रान्सफर होना, एक ग़रीब औरत चरखा कातती दिखाई देती है, एक शख्स आकर उससे सूत खरीदता है)

मोहनी—आह, भगवान! यह मैं क्या देखती हूँ! एक दुखियारी स्त्री अपने गरीबी के तमाम दिन सूत कात २ कर व्यतीत कर रही है। अपने जीवन का सबसे ज्यादा हिस्सा इस दीनावस्था में पूरा कर रही है।

(सीन ट्रान्सफर होता है, एक सुखी स्त्री दिखाई देती है)

कलियुग—मोहनी! अपना चित्त प्रसन्न करने के लिये, अपने दुःख को सुख से बदलदेने के लिये इसे देख! यह भी एक स्त्री है जिसने सुख को अपना दास बना लिया है। मूर्ख लोग इसे पाप कहते हैं, किन्तु आनन्द यदि पृथिवी पर है तो बस यही है।

मोहनी—तो फिर अब मैं?

कलियुग—दोनों को देख और एक को पसन्द कर। सुख से या दुःख से ज़िन्दगी बसर कर।

मोहनी—क्या यही सुख सुख है? यही परलोक का सुख है? नहीं नहीं, इस सुःख में जन्म भर का दुःख मिला है। ओह, मरने के बाद कब दुख और कब सुख। इसे इसे, हां हाँ, मैं इसे लूँगी, यही सुख है, यही आनन्द है। बोदे ख्यालों, निकलो निकलो, मेरे हृदय को खाली करो। जाओ जाओ, अब म स्वतन्त्र हूँ।

महक में महक नंग में नंग हूँ मैं। सफा में सफा रंग में रंग हूँ मैं॥
गोहर में गोहर संग में संग हूँ मैं। हया में हया अंग में अंग हूँ मैं॥
चमन में चमन हूँ फिजा में फिजा हूँ। खिजां में खिजां हूँ हवा में हवा हूँ।

(कलिका अदृश्य होना अजीतसिंह का आना)

अजीत—क्या है? मोहनी, क्या है?

मोहनी—अरे निर्दयी! इतना कठोर हो गया?

अजीत—मोहनी! मोहनी!

मोहनी—हाय अफसोस! पतिके मरने पर सती स्त्री का जीना यदि असम्भव था तो राजा राममोहनराय ने सती नारियों के लिये चिता के दरवाजे क्यों बन्द करा दिये?

अजीत—मैं बताता हूँ मोहनी, मैं बताता हूँ! रणजीत के मरने का शोक अवश्य उसके प्रेमी बन्धुओं को रुलाता है। परन्तु भगवान के कार्य में मनुष्य से क्या बोला जाता है।

मोहनी—कहो कहो अजीतसिंह! मेरे पति के शुभचिंतक मित्र, बोलो!

अजीत—मोहनी, तुम कोई साधारण स्त्री नहीं हो। भगवान की कृपा से बी० ए० पास करके एक विदुषी स्त्री कहलाती हो। भला विचार करो कि मरने वाला क्या कभी किसी तरह वापिस आ सकता है?

मोहनी—नहीं कदापि नहीं।

अजीत—मरे हुये का शोक उसके मित्रों को क्या फायदा पहुँचाता है।

शादीये लालज़ार अब आने की नहीं।
इस बाग़ में बहार आने की नहीं॥

मोहनी—कुछ नहीं, केवल समयाधीन संतोष।

इस वाकिये का मातम बरसों बपा रहेगा।
काँटा हरेक दिलमें ग़म का चुभा रहेगा॥

अजीत—इस तरहके संतोषको फलासिफो और साइन्सने क्या समझाया है?

मोहनी—एकख्याली तसल्ली। एन आइडियल कनसोलेशन। (An ideal consolation)

अजीत—तो प्यारी बहिन! यह सारी पृथ्वी और उसके सम्बन्ध ख्याली हैं। इन्हें बुद्धिमान आदमी एक स्वप्न के समान असार बिचार करके हृदय से निकाल देता है।

मोहनी—परन्तु हर एक कार्य का संपूर्ण होना किसी युक्ति के आधीन होता है।

अजीत-वह युक्ति मेरे पास है।

मोहनी—वह क्या?

अजीत-वह यह कि, जैसे लोहे को काटने के लिये लोहे की आवश्यकता है, वैसेही एक प्रेम को तोड़ने के लिये एक दूसरे प्रेम की जरूरत है।

मोहनी—अजीतसिंह! प्रेम मनुष्य के लिये उस प्रकार तनहा पैदा हुआ है जिस प्रकार एक वृक्ष केलिये एक बीज बनाया गया है। सुनो, एक विद्वान क्या कहता है "थिंक नॉट एफेक्शन इज वेस्टेड-एफेक्शन इज नेवर वेस्टेड"—

(Think not affection is wested affection is never wested.) अर्थात् विचार न करो कि प्रेम का हृदय से नाश हो जाता है। प्रेम नाश के योग्य नहीं।

अजीत—सत्य है, परन्तु प्रेम जिसका नाश नहीं होता, वह उसका प्रेम है। जिसके जीव के लिये नाश और काल के शब्द नहीं बने हैं, यानी श्रीभगवानका प्रेम।

नतीजा है यह संगति का कि जो है काम संसारी।
न कोई बाप का बेटा न कोई नाथ की नारी॥
अगर रिश्ते नये बनते तो बढ़ जाती दुराचारी।
विचारो मोहनी मनमें, हो तुम इस प्रेम की मारी॥
ये सब आधीन धनके हैं, अगर धन है तो सब कुछ है।
स्वरूप और प्रेम पद पदवी, जगत् में जानो सब कुछ है॥

मोहनी—धन धन, आह! इसी धन को रणजीत ढूँढने गया था? इसी धन ने मुझे विधवा और उसे मुक्तधाम की तरफ रवाना किया।

धन संताप की जड़ है, जग में धन है दुःख की मूल।
कठिन शूल सम है यह, समझो मन तुम इसको फूल॥
ऐसी सखी से क्या मिल बैठूँ, जिसके धनी हजार।
ऐसे द्वार में कैसे रहना, जो हैं निरआधार॥

अजीत—मोहनी, धन स्त्री के गले का हार है, पुरुषों के प्रयोग के लिये एक शक्ति है, और परमात्मा से मिलने का सन्देशा ले जाने वाला एक दूत है। अमीरों की विलास की सामग्री और ग़रीबों का दुःख हरने वाला है। चल चल, सुख के मार्ग में कदम रख।

मोहनी—अर्थात्?

अजीत—विवाह कर।

मोहनी-अजीतसिंह ! आश्चर्य की बात है कि आप ऐसे विद्वान बुद्धिमान होकर मुझे ऐसी सलाह देते हैं।

अजीत-प्यारी बहिन ! पढ़े लिखे और विद्वान लोग, इस संसार को दुःख और क्लेश का द्वार समझते हैं,

मोहनी-यह तो सच है । मगर संसार क्या कहेगा। अपने पराये क्या विचार करेंगे ? एक ग्रेजुएट विधवाका करेक्टर पतिके मरते ही इतना हीन, ऐसा तुच्छ ऐसा कमजोर और इतना कच्चा साबित होने पर मोहनी स्त्रीमंडल को लजाने के लिये, पतिव्रता लेडियों को शर्माने के लिये, कैसे जीती रहेगी ?

अजीत-शर्म और लज्जा अर्थहीन शब्द हैं। आश्चर्य की बात है कि तुम ऐसी विदुषी होकर उसी पुरानी लकीर की फकीर बनी हुई हो । भला विचार करो, पुरुष दो दो तीन तीन स्त्रियां रखता है और उस स्त्री को जो संसार के सुखों में हिस्सा लेने की ख्वाहिशमन्द रहती है. जिसकी इच्छायें और कामनायें हर समय उसे घेरे हुये व्याकुल रखती हैं, अकेली अन्धेरी रातों में आकाश की ओर देखने और ठन्डी साँसें भरने के लिये छोड़ देता है। क्या यह न्याय है? और यह मानवजाति को जेब देता है। मोहनी? सोचो ! पुरुष का दिल स्त्री से अधिक कड़ा होता है, वह दुःख झेल सकता है, परन्तु स्त्री उसको सहन करने की शक्ति नहीं रखती।

मोहिनी-इसलिये ?

अजीत—उठ और उमंगों से भरे हुये दिल को सोग और बेमौत मरने से बचा।

मोहनी—फिर मुझे क्या करना चाहिये ?

अजीत—विवाह।

मोहनी—किससे ?

अजीत—सर प्रताप से। चल उठ. वह अपने धन से तेरी टूटी हुई आशाओं को जोड़ देगा। तेरे दुःखको सुख से बदल देगा।

मोहनी—यह तुम कहते हो ?

अजीत-हाँ।

मोहना—और संसार क्या कहेगा ?

अजीत—संसार झूठा है, उसका व्यवहार झूठा है. वह सर्वदा उल्टे मार्ग पर चलता है। आओ मेरे साथ चलो, समय नष्ट न करो।

इकराम—(आकर) क्या है माता ? यह कौन ? अजीत ! और आप कहाँ जाने को तैयार हैं ?

अजीत—प्रेमके संसार में. सुख और शान्ति की सखियों से दिल बहलाने।

इकराम—यानी ?

अजीत—सरप्रताप की माया से अपनी मुसीबतों को दूर करने।

इकराम—साहेब ! हमको दूसरे के धन की क्या ज़रूरत है। हमारी दौलत जिसके दम से थी जब उसी को भगवान ने छीन लिया तो फिर हमको दूसरों के दरवाजों पर फानी दौलत के लिये भीख माँगने को जाने, और उसे हासिल करने की कोई जरूरत नहीं।

मोहनी—तुझे नहीं, परन्तु मुझे तो उसकी ज़रूरत है। मैं अपनी जवानी को नष्ट करना नहीं चाहती। मैं कुढ़ कुढ़ कर जीना नहीं चाहती और इसीलिये इस झोपड़ी को छोड़ती हूँ।

इकराम—हैं. ? यह आप क्या कह रही हैं ? मैं हरगिज़ आपको जाने न दूँगा।

मोहनी—मैं अवश्य जाऊँगी। मुझे कौन रोक सकता है ?

इकराम—मैं ! इकराम, रणजीत का सच्चा नमकख्वार।

अजीत—तू क्या चीज़ है !

इकराम—एक दुखियारे, सच्चे हिन्दू के मन्दिर का मुसलमान पहरेदार।

न होने दूँगा अब पामाल मैं दिल के शिवालों को।
अज़ाँ देकर जगाऊँगा मैं अब नाकूस वालों को॥
मुसलमाँ हूँ मगर इस बुत् शिकन की जान ले लूँगा।
बचाने के लिये मसजिद समझकर जान दे दूंगा॥

मोहनी—म्लेच्छ नमक हराम ! मैं अवश्य जाऊँगी।

इकराम—मेरे मरने के बाद।

अमानत है यह आक़ा की इसे मैं जाँ समझता हूँ।
मुसलमाँ हूँ वफादारी को, मैं ईमाँ समझता हूँ॥
मुहाफ़िज़ मैं हूँ कोई इसको हरगिज़ ला नहीं सक्ता।
कोई डाकू इसे ज़िनहार लेकर जा नहीं सक्ता॥

मोहनी—तू नौकर है, नसीहत करना तेरा काम नहीं।

इकराम—हाँ मैं नौकर और वफादार हूँ, इसलिये मालिक की इज्जत बचाना मेरा फ़र्ज़ है।

अजीत—बकने दो, आओ मोहनी, मेरे साथ चलो।

इकराम—ख़बरदार ! ठहर जाओ।

मोहनी—हट जा पाजी गुलाम !

एकराम- आह !

(मोहनी ढकेल देती है, एकराम गिर कर बेहोश हो जाता है)

ड्राप।

अंक दूसरा-सीन पहला

पहाड़ की कान।

(रणजीत पहाड़ खोदते २ थक जाता है और अपनी बद नसीबी पर अफसोस करते हुये गाता है)

रणजीत— गाना।

खिजां से बरबाद हो गये सब, कोई भी गुल पैरहन नहीं है।
गुमां यह होता है इस चमन पर कि हैं बियाबां चमन नहीं है॥
उड़ाई गरदूं ने धज्जियां तक रहा न एक तार भी सलामत।
मचाया है अपनी ऐबपोशी कि तन पै वह पैरहन नहीं है॥
हजार अफसोस काश परदा हुआ अयूब बरहंसगी का।
हुये हैं मुरदा बदस्त जिन्दा नसीब हमको कफन नहीं है॥
कुछ ऐसा छाया है खौफ सय्याद अपनी मगश् की अंजुमन पर।
खामोश बैठे हैं हम नवा सब किसी को ताबे सुखन नहीं है॥
मिटी हुकूमत के साथही आह अपनी वह आन बान सारी।
वह शाने जमजम नहीं सलामत वह शोर गंगो जमुन नहीं है॥

आह, विधाता! इस पर्वत को काटते काटते मैं बिलकुल बेदम होगया हूँ। अब न शरीर में शक्ति रह गयी है और न

आशा का कोई हिस्सा मनमें रह गया। परन्तु नहीं मुझे निराश न होना चाहिये। मेरा और समस्त मानव जाति का कर्तव्य है कि जो कार्य आरम्भ किया जाय उसको पूर्ण परिश्रमसे समाप्त करना चाहिये।

(फिर पहाड़ काटना शुरू करता है)

आह ! क्या करूँ, प्यास से मरा जाता हूँ। नूरुद्दीन को पानी लेने गये हुये बहुत देर हुई, परन्तु न जाने कहाँ उसने देर लगाई। अब मुझे सहन नहीं होता। जल की एक बूँद भी नहीं। भाई नूरुद्दीन ! भाई नूरुद्दीन !

नूरुद्दीन—(दूर से) आता हूँ भाई ! न घबराना। आह !

(सर पत्थर से टकरा जाता है, खून निकलता है)

रणजीत—क्या हुआ भाई ?

नूरुद्दीन—कुछ नहीं सर फूट गया। शायद खून निकलता है। लो मैं पानी ले आया, मगर तुम किस तरह पीवोगे?

रणजीत—जिस प्रकार मुझे अमृतरस या गंगाजल पीना चाहिये।

मेरा सच्चा प्रेमी मेरा बन्धु दोस्त जानी है।
यह पानी अब मेरी नज़रों में, गंगा जी का पानी है॥

नूरुद्दीन—तुम थकगये हो, लाओ फावड़ा मुझे दो, अब मैं खोदता हूँ। (खोदता है) आह ! कहीं सोने का निशान ही नहीं मिलता।

रणजीत—आह ! विधाता कहाँ विलम्ब लगाया ? तुम तो दुःख और संकट में साथ दिया करते हो ! दुःखियों की सहायता किया करते हो ! आज एक मुसलमान अपने पड़ोसा हिन्दू के लिये इस तरह जान दे रहा है, आज तुम्हारी प्यारी भूमि पर हिन्दू मुसलिम की ऐक्यता स्थापित रहो ही है और

तुम प्रसन्न नहीं होते ? यदि तुम सहायता नहीं करते तो क्यों मृत्यु को नहीं भेजते ? आह ! यमराज क्या देर है ? क्या तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं ? आह ! महाकाल रूपी मृत्यु ! आ-आ, मैं तुझे ज़ोर ज़ोर से पुकारता हूँ।

थक गया हूँ मैं किसी करवट तो मुझको चैन दो।
तुम नहीं आते हो तो प्रभु मौतही को भेजदो॥

गाना।

मिटाओ विपता मेरी स्वामी जगतनन्दन दुःखभंजन।
लो आओ—मेरी दुःख की फांसी,
नन्द के नन्दन कंसनिकन्दन मिटाओ॥
भवसागर में डूबत मेरी नय्या बिन खेवैया—
भारी भँवर है, मिला जलचर है उबारो नाथ—
दुष्ट निकन्दन—खलदल भंजन॥

(कृष्णदर्शन)

कृष्ण—मैं प्रसन्न हूँ। आओ तुम दोनों मेरे सामने एक दूसरे से गले मिलो और शपथ खाओ कि सदा एक दूसरे से सच्चा प्रेम करेंगे।

नूरुद्दीन—हाँ हाँ ! हम दोनों भाई हैं, भाई बने हैं और भाई बनकर हमेशा जिन्दगी बसर करेंगे।

रणजीत—रहेंगे दूर हम गुस्सा अदावत और कीने से।
लगाया है मुसलमाँ भाई ने हिन्दू को सीने से॥

(सीन ट्रान्सफर होता है, तमाम सोनाही सोना हो जाता है, दोनों गले मिलते हैं, भगवान फूल बरसाते हैं)

टेब्लो

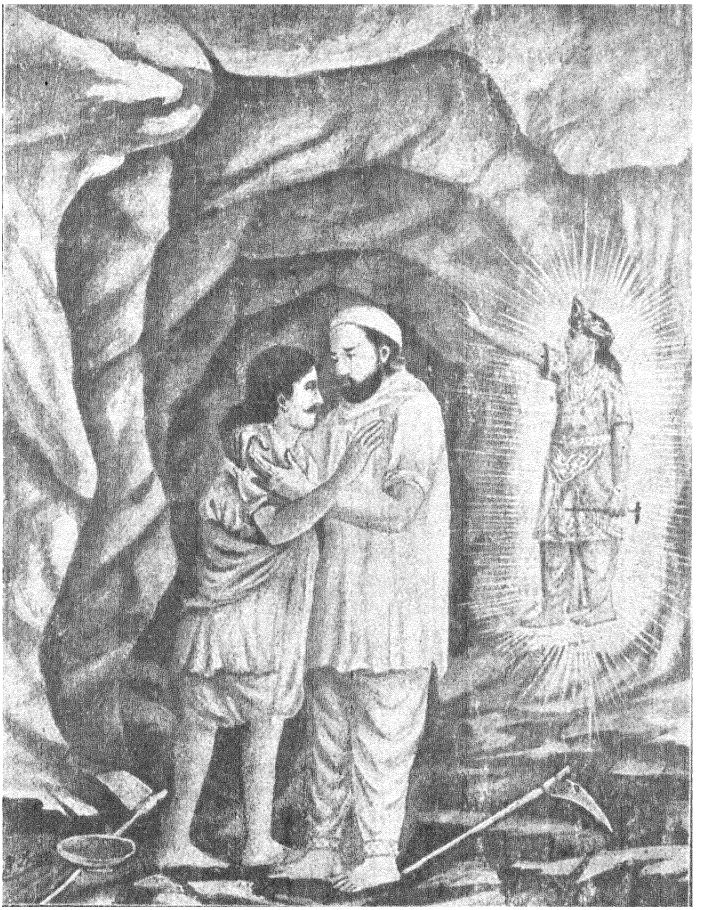

रणजीत—

रहेंगे दूर हम गुस्सा अदावत और कीने से ।
लगाया है मुसलमां भाई ने हिन्दू को सीने से ॥

अंक दूसरा-सीन दूसरा

सरप्रताप का मकान

[कामिनी उदास बैठी है सहेलियाँ गाती हैं]

सहेलियाँ-- गाना

समर की कलियां खिल गई गुइयां ।
गुल व बुलबुल की शादी है ।
बादे बहारी मस्त है प्यारी गुलशन में आबादी है ।।
बुलबुल चहके, हरगुल महके, पाये सब अंदाज से बहके,
दुख संकट परघट को सहके हरगम में आजादी है ।
जालीकी लडियां चोलीकी छडियां आये लुटाये शादीकी घडिया ।
जूट गई रिश्ता इश्क की कडियां शाद मुबारक बादी ।।

कामिनी—अपवित्र वस्तु से निकलती हुई दुर्गन्धि, जिस प्रकार किसी वृक्ष पर बैठे हुये भौंरे को उदास कर देती है और वह फुलवारी में सुगन्धित फूलों से अपना मन खुश और पवित्र करने के लिये दौड़ जाता है, उसी तरह यह संसार की देह, यह राजसी वस्त्र मैला और बदबूदार हो गया है। हाँ, हाँ, मैं जरूर लोभी भौंरे की तरह स्वर्गीय कानन में बिहार करने के लिये उज्वल वस्त्र पहिन कर उड़ जाऊँगी।

मालती—क्या है बाई जी ? इस खुशी के समय आप ऐसे शोक के बचन मुख से क्यों और किस कारण निकाल रही हैं ?

कामिनी—आह ! शोक अति शोक, आशा की अर्थी सजाई गयी है, निराशा की ज्वाला चिता बनकर भड़क रही है और मैं-एक निराशा की ठोकरों से कुचली हुई अबला कामिनी उसके पास खड़ी शोक मना रही है।

मालती—क्यों, क्यों ?

कामिनी—मुझे अजीत की पत्नी बनाने के लिये विवश किया गया है। मैं एक बोलती चालती लोथ की तरह उसके द्वार के श्मशान में जला दी जाऊँगी।

मालती—परन्तु ऐसा करने का कारण ? तुम्हें जिस बात का भय है, वह यह भील की पुत्री मालती दूर कर सकती है।

कामिनी—दूर कर सकती है ! क्या मैं मान लूँ ? क्या इस काली देह के अन्दर दया और प्रेम की बनी हुई आत्मा सहायता का प्रकाश और क्लेश से छुड़ाने वाली युक्ति है ?

मालती—अवश्य युक्ति है।

काला हृदय नहीं है दरिया, जिसका काला रूप।
काले मेघ के अन्दर देखा, चन्द्र रूप है भूप॥
चन्द्र भूप के मुख पर लागी, काला तिलक समान।
काला बन आया है जगमें, जानों कृष्ण सुजान॥

कामिनी—सच है, मालती सच है, परन्तु उस उलझनको कौनसी युक्ति के नाखून से खोलेगी ?

बुद्धि मेरी मन्द हुई है सूझत नाहीं ठौर।
छाई रैन विकट संकट की कब होवेगी भोर॥

मालती—अभी इस समय चलो, जल्दी करो। मुझे अपनी साड़ी चोली पहिना दो और तुम अन्दर बैठी रहो।

कामिनी—तो क्या मेरी जगह अजीतसिंह के साथ तू दुल्हन बन कर जायेगी ?

मालती—अवश्य, यह दासी इसी युक्ति से तुम्हें बचायेगी।

कामिनी—परन्तु यह तो धोका है !

मालती—प्रेम में सकल प्रकार की युक्तियां धोका नहीं कहलाती। चलो आओ, जल्दी करो।

(दोनों का जाना सरप्रताप और अजीत का आना)

सरप्रताप—क्षमा, दया, पुण्य, प्रेम मैं कुछ नहीं समझता।

अजीत—बचपन का समय ऐसा ही होता है, महाराज ! मैं उसे समझाऊँगा।

सरप्रताप—समझा लो, समझा लो, परन्तु उस हठीली अभिमानिनी छोकरी को मेरे घर से अभी अभी निकालो। एक पिता पर पुत्री का जो कुछ हक होता है मैंने अदा कर दिया। परन्तु एक पुत्री का पिता की आज्ञा और सेवा में रहना फर्ज होता है, वह उस फ़र्ज से खाली है। मँगाओ, मँगाओ, पालकी मँगाओ, और इसी वक्त उस कर्महीन छोकरी को मेरे यहाँ से ले जाओ।

अजीत—श्रीमान् ! स्त्रीजाति कभी तो पशु की बुद्धि और कभी देवता की बुद्धि रखती है।

सरप्रताप—स्त्रीजाति की बुद्धि देखो, वह मोहनी भी एक स्त्री है, जिससे कल ही तुमने मेरा विवाह कर दिया। जिसने घर में कदम रखतेही कल से आजके समय तक सारे घरों को संसारी जेवायशों से सज़ा दिया है। जब तक कामिनी संसार व्यवहार के कामों को अच्छी तरह न जान

ले, तब तक मेरी पुत्री और तुम्हारी पत्नी कहलाने के योग्य नहीं है। कामिनी! कामिनी! कामिनी!

कामिनी—(अन्दर से) जी! पिता जी!

सरप्रताप—चलो आओ, तुम्हारा स्वामी, तुम्हें अपने साथ ले जाने का इन्तज़ार कर रहा है।

मालती—आई! पिता जी।

सरप्रताप—मोहनी! मोहनी!

मोहनी—आयी! प्राणनाथ!

सरप्रताप—तुम्हारा पति सरप्रताप अपने मित्र अजीत को कन्यादान कर चुका। इसलिये तुम भी आशीर्वाद देकर पुत्री को यहां से जाने की आज्ञा दो।

मोहनी—जो आज्ञा! पुत्री! शरीफ़ खानदान की लड़की, राजपुत्रकुलकी निशानी, क्षत्रिय वंशकी लाज, तेरा पिता तुझे तेरे पतिद्वार जाने की आज्ञा देता है। जा, जी, आबाद रह और सरप्रताप के नामको अपने पातिव्रत की शक्ति से उज्ज्वल कर।

मुकुट थी पुत्री का पहले तू सरप्रताप के सर का।
बनी है अब तिलक पेशानी पै शौहर के केसर का।
अगर मर जायँ आशायें, न स्वामीद्वार छुड़ आना।
चिता में हड्डियों के शर्म की अग्नि में जल जाना॥

मालती—मैं ऐसा ही करूँगी।

सरप्रताप—पुत्री पुत्री! क्या पितृवियोग के शोक से तेरी आवाज़ ही बदल गयी?

मालती—जी! पिता जी!

सरप्रताप—आह! ले जाओ। मेरे खजाने के अनमोल हीरे को, मेरे द्वार के दीपक को ले जाओ, वरना मैं। (रोना)

अजीत—महाशय ! महाशय ! इस खुशी के समय रंज न करो ।

(सहेलियों का गाना और सब का जाना)

सहेलियाँ— गाना ।

सभी शादी की धूम मचाओरी-
दूल्हा दूल्हन की खुशी बढ़ाओरी ॥
खुशहाली के बाजे बजाओरी ।
नृत्य करो और तान लगाओरी ॥
मंगल के गाने गाओ सुरीली तान सुनाओ ।
बाजे पै हाथ चलाओ, ढोलक के बोल सुनाओ ॥
धिक तिलांग तक धिकतिलांग तक कड़ांग धिना धा ॥

कामिनी—(आकर) गयी, गयी, मेरे संकट को अपने सिर पर उठा कर ले गई । भील की पुत्री दासी, वफा और नमकहलाली की शक्ति मेरे कष्ट को हर ले गई । प्राणप्यारे ! मोहनसिंह, अगर मालती मुझे न बचाती तो ?

न मैं जीती न तू जीता, न मैं मरती न तू मरता ।
न छुट सकते न मिल सकते, न घाव प्रेम का भरता ॥
सरोवर कष्ट का है और खेवैया नाव का तू है ।
विधाता आबरू रखना, यह युक्ति प्रेम हेतु है ॥

अरे ! वह पिता जी आ रहे हैं ।

(चली जाती है सरप्रताप आता है)

सरप्रताप—अब मैदान खाली हुआ, कुवाँरी कन्या-पैरका एक काँटा थी, वह भी निकल गयी । मोहनी ! मेरे हृदय आका-

श के मधुर चन्द्रमा की निर्मल ज्योति ! तेरे सुन्दर स्वरूप को धो रही है, और सरप्रताप की मुश्ताक जमाल नजर नेत्रों का पर्दा उठा कर इन मधुर होंठों से बहने वाले मद के चश्में पर बेताबी में लीन हो रही है।

मोहनी—प्राणपति ! मोहनी एक विधवा स्त्री अपने स्वर्गवासी पति की चिता में अपनी कामनाओं, आशाओं, उमंगों और खुशियों को जला चुकी थी, अब आपके प्रेम अमृत से दोबारह जीवित हो गयी।

सरप्रताप—और अपने बूढ़े पति की मरी जवानी को भी जीवित कर रही हो।

(हँसना)

बसे घर किस तरह, दोनों को है तजरुबा पहले।
तू बीबी बन चुकी पहले, मैं शौहर बन चुका पहले॥

दोनों— गाना।

भर कर रस के प्याले रसीले पीले छबीले पिया।
प्याले हैं रसवाले, प्याले हैं रसवाले।
मनभाये यह तोरे नैना रसीले प्यारे॥ पीले०—
छाले जिगर के निराले हुये—दिलेबिस्मिल के आओजी।
आओ लगाओ गले, आओजी आओ लगाओ गले॥
सर०—तन मन धन सब वारूँ मैं तुझ पर।
वारूँ निसारूँ मै तुझ पर जान जिया॥ पीले०—

मोहनसिंह—(अन्दर से) कामिनी, कामिनी !
सरप्रताप—कौन है ?

मोहनसिंह—मैं हूँ महाशय ! आपका सेवक मोहनसिंह !

सरप्रताप—क्यों ? किसलिये आये हो ? क्या कामिनी से मिलने ? अहा, हा, हा, हा, ।

मोहन०—वह कहाँ गयी ?

सरप्रताप—अपने पति के घर ।

मोहन०—पति, कौन पति ?

सरप्रताप—अजीतसिंह ।

मोहन०—तो क्या, अजित से उसका विवाह हो गया ?

सरप्रताप—हाँ, हाँ, ।

मोह० - आह ! सरप्रतापजी, आपने इस समय मुझे क्रोध के अग्निबाण से मार डाला ।

सरप्रताप - क्यों, किस लिये, किस कारण ? जब कामिनी तुम से प्रेम करती थी और तुम उसका अपमान करते थे । तब क्या वह अपमान सरप्रताप के लिये अग्निबाण न था ? जाओ, जाओ, अब इस घर में तुम ऐसे अन्यायी लोगों का कुछ काम नहीं ।

मोहन०—श्रीमान् ! मैंने तो कामिनी का कभी अपमान नहीं किया, परन्तु अपने एक रणजीत नामी मित्र के प्रेम वियोग के दुःख के कारण कामिनी के सवालों का जवाब न दे सका ।

सरप्रताप—यानी कामिनी, रणजीत के प्रेम के मुकाबिले में प्रेम करने के योग्य नहीं थी ? जाओ, जाओ ऐसी वाहियात बातोंको मेरे सामने न लाओ । कामिनी अब तुम्हारे हाथ न आयेगी ।

मोहन०—नहीं, आयेगी और जरूर आयेगी । सरप्रताप ! कामिनी अजीतसिंह को छोड़ कर पृथ्वी आकाश के देवताओं

की शक्ति से, इन्द्रभवन की शोभाओं और स्वर्गीय सुखभोग से भी नफरत करती हुई मृत्युलोक में रहने वाले मोहनसिंह के पास दौड़ी हुई आयेगी।

जुदा होगी न वह मुझ से जो मेरा प्रेम सच्चा है।
जिसे कहते हैं सच्चा प्रेम, वह कब सूत कच्चा है॥
पती कहकर फिरेगी वह फिरी जिसकी मती होगी।
न छोड़ेगी पती अपना कभी गर वह सती होगी॥

कामिनी—(अन्दर से) कामिनी कभी नहीं फिरेगी।

सरप्रताप—तो क्या, तुम एक ब्याही हुई लड़की की बदनामी करने आये हो? मोहनसिंह, चले जाओ, अगर अपनी और अपने खानदान की इज्जत रखना चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ।

मोहन०—चला जाऊँ?

सरप्रताप—हाँ, हाँ, चला जा।

मोहन०—कहाँ?

सरप्रताप—जहाँ से इस घर का रास्ता नजर न आये।

मोहन०—श्रीमान्, जिस जगह से इस घर का रास्ता नजर न आये वह तो परलोक है।

सरप्रताप—जिन लोगों को सच्चा प्रेम जताने का अभिमान है वह परलोक जाने से नहीं डरते।

मोहन०—तो क्या मैं डरता हूँ? क्या मैं परशुराम के क्रोध से डरने वाला क्षत्रिय हूँ? क्या मैं राजपूत विधवाओं की कीर्ति को ठट्ठे में उड़ाने वाले लोगों को अपनी कायरता पर हँसाऊँगा? नहीं, नहीं, सरप्रताप! लो देखो यह कटार, लोक और परलोक के रिश्ते को काटने के लिये आपके हुक्म का इन्तजार कर रही है।

सरप्रताप—तो क्या तू आत्मघात करके मुझे बदनाम करना चाहता है ? अरे कोई है, मोहनी ! मोहनी !

मोहनी—(आकर) क्या है ! प्राणनाथ ! क्या है ?

सरप्रताप- बचाओ २ इस आत्मघातक दृश्य को मेरे सामने से हटाओ।

मोहनी—आह, आह !

(सरप्रताप और मोहनी अपने हाथों से आँखों को दबाये आस्तीन उलटे खड़े रहते हैं ।)

मोहन—चल, ऐ घातक कटार ! चल । लोहे की धार से लहू की धारा को कामिनी की शान्ति भवन में बहा दे । ऐ पवित्र प्रेम की शक्तियों ! आओ, मेरी मदद करो !

कामिनी - (आकर) बस खबरदार '

मोहन० —कौन ?

कामिनी--चुप !

टेढ़ला।

अंक तीसरा-सीन तीसरा

दिलफेंक का मकान।

दिलफेंक—अहा, हा, हा, रुपया और औरत दोनों किस्मत से मिलते हैं। खुदा झूठ न बुलाये; मौजूदा साल, माहे हाल

में जिस रोज़ कि मामूली रक़म बन्दे के हाथ चढ़ गयी ठीक उसी रोज़ एक हस्पताल की दाया, जिसका घर न बार, सर न सरकार, जात न पात सबसे न्यारा, अनब्याही न ब्याहता, गोल चेहरा जिस्म भारी, बराये नाम कुँवारी उम्र का नम्बर ३० के क़रीब, नाक व नकशा अजीब व ग़रीब, चाल में मोटर की सी तेजी, जिस्म देशी-लिबास अंग्रेज़ी; एकाएक मुझपर आशिक हो गयी। अहा, हा, हा, मैं भी अपने नाम का दिलफेंक, दूसरे रोज जब मैदान खाली पाया तो सबसे पहले बायाँ हाथ चूमके, दो चार बार हर्द गिर्द घूमके खैरात हुस्न के नाम से, बोसों का तबर्रुक, कुछ लेके कुछ दे के, हाठों के टेलीफोन से शादी का पैगाम.....कानों को खुशी का ट्यून सुनाया। फिर क्या था, इश्क के मुहब्बत की पुतली फैशनबुल हूर, चश्मे बद्दूर, अव्वल तो नाजेमाशूकाना से बराये नाम झेप गयी, और जब विलायती इश्क ने रंग जमाया, और देशी दिल ने गुदगुदाया, तो मुँह फिरा के—मुसकुराके, बात बना के, हाथ मिलाके, कुछ बेशर्मी से और कुछ शर्मी से कहने लगी, औल राइट मंजूर। ओह, हो, हो, हो, आखिर जनाब जब खुशी की घड़ी आई, किस्मत ने की रसाई, तो खुदा खुदा करके कोर्ट के अन्दर, इजलास के बीचोबीच, वकीलों के आमने सामने, तमाशबीनों के अगाड़ी पिछाड़ी, मजिस्ट्रेट साहेब ने पहले ललकार के फिर डेकार के, रजिस्ट्री कानून, और इंगलिश ट्यूनके साथ दोनों का निकाह पढ़ाया और अपना लेकचर सुनाया। जब निकाह की गाँठ पड़ गयी और मेरी डिगरी बढ़ गयी तो मैंने भी फौरन से बेश्तर दूल्हन को अपने हाथ की अंगुश्तरी पहना के, सब के सामने गले से लगा के, बाइबिल उठाके, कसम खाके, सीने

से सोना, लब से लब मिलाके, तमाशबीनों के आगे सर झुकाया और बहज़ार दिक्कत दुलहन को गाड़ी में बैठा और फिर गाड़ी से उतार के घर ले आया। अब ज़रा मुख्तसर वारदात हसरत की बातें सुनिये, जैसेही दुल्हन ने कमरे खास में पहुँच के लिवासे उरुसी उतारा तो देखता क्या हूँ, सीने में कपड़ा ठूँसा हुआ, मुँहपर पौडर मला हुआ गोया नई टमटम के धोके में पुराना छकड़ा, बाल मसनूई, चालमसनूई. है है है, बस कुछ न पूछिये. "एक चुप, हजार बला रद्द" वाला मजमून ये मामिला देख के मैं भी पीठ फेर, कदम उठा कमरे के बाहर दालान के बीचोबीच आंखें मींज के बैठा रहा। अभी बैठा रहा, क्या मानो बैठा हूँ। अब आगे देखिये क्या गुल खिलता है। औरत तो किस्मत से मिली है, अब जहेज़ में कुदरत से क्या मिलता है,

(लेमूनिचोड़ का आना)

लेमूनिचोड़—मैं जनाब को अपनी सुरीली आवाजसे, निराले अन्दाज से, अपने हिलेसे, जनाने वसीले से, दोस्ताना तरीके से, इंगलिश कायदे से, टोपी उतार के, सर झुका के गुड़ मौर्निङ्ग कहता हूँ।

दिलफेंक—मैं जनाब को निहायत तपाक से, फहम व इदराक से, इस्तकलाल वो पामर्दी से, मुहब्बत व हमदर्दी से, अपनी मरजी व खुदग़रजी से, बाखुल खास इनायत से, इस लेडी की रियायत से, आंखें मिलाके, सर उठा के, गुडनाइट कहता हूँ।

लेमूनिचोड़—जनाब का नामे नामी, इस्मे गिरामी ?

दिलफेंक—अलमारूफ़ घसीटा।

लेमूनिचोड़—दिलफेंक, अलमारूफघसीटा, बिन ?

दिलफेंक—खाक धूल! आपको मुझसे मतलब है, या मेरे बाप से?

लेमूनिचोड़—नहीं जनाब, आपसे।

दिलफेंक—तो फिर मतलब पर आइये, दिलफेंक मेरा ही नाम है, आप अपनी गरज़ बताइये।

लेमूनिचोड़—सुनिये, मैं आपका साला हूँ।

दिलफेंक—आफत पर आफत! ससुर, सास, साली, साला, जोरू, गरज कि तमाम कुनबे का कुनबा जुड़ा। कहिये आप क्यों नाज़िल हुये?

लेमूनिचोड़—लीजिये, मैं आपको शादी की मुबारकबाद और दुल्हन के जहेज में फिलहाल यह परी तिमशाल लड़की देता हूँ। यह आपकी प्रेसीडेन्ट, जोरू का पास्ट खाविन्द का सैम्पुल है।

दिलफेंक—क्या, जहेज़ में लड़की?

लेमूनिचोड़—जी।

दिलफेंक—हत्त तेरी किस्मत की ऐसी तैसी, जहेज़ में लड़की? खैर गनीमत है, यह भी है हमदर्दी।

लेमूनिचोड़—मगर साथही इसके यह भी वसीयत करता हूँ कि आप जब तक जिन्दा रहें, इस लड़की को बेटी की तरह इल्म पढ़ायें, मगर बीवी की तरह नाज़ उठायें, क्योंकि यह आपकी सौतेली बेटी और जहेज़ का माल है।

दिलफेंक—हां!

ले०—और सबसे बड़ी बात, दिन रात फिक्र फौर क़ाबिले गौर यह है, कि इसे हरवक्त मग़रबी आज़ादी दिल खोल कर, हरएक से मुहब्बत, पर तोल कर—घूमने को गाड़ी,

दिलफेंक—और पहनने को साड़ी?

लेमू० – मुहँ माँगा, कीमती लिबास।

दिलफेंक – वाह बेटा! खब्तुल हवास। पीने को सिगरेट और सूँघने को नास।

लेमू० – ग़रज कि इसकी खास फरमाइशों का ध्यान रखें, इस की बातों पर कान रखें।

दिलफेंक – बहुत बेहतर। आगे –

लेमू० – खाना हमेशा मेज पर खिलायें, कन्धे पर साफ तौलिया रखें, विलायती साबुन से हाथ धुलायें।

दिलफेंक – खूब और बहुत खूब।

लेमू० – मगर हाँ, शाम के टिफिन पर एक शराब की बोतल।

दिलफेंक – फकत एक शराब की बोतल?

लेमू० – जी हाँ, सिर्फ एक शराब की बोतल निकाल रखें और सुबह के नाश्ते पर दो चार अण्डे उबाल रखें।

दिलफेंक – साथ इसके और भी कुछ?

लेमू० – फकत एक प्यालीमें काली मिर्च और दूसरी में नमक डाल रखें।

दिलफेंक – अच्छा, बाद अज तआम?

लेमू० – कुछ मेवा कुछ फूट, कुछ आम कुछजाम।

दिलफेंक – उसके बाद?

लेमू० – सोने का इन्तजाम।

दिलफेंक – सोने के लिये पलंग कैसा हो? कमानीदार या सादा?

लेमू० – कमानीदार, कीमती, निहायत उम्दा साफ सुथरा बैठते ही लचक जाने वाला – उठतेही उचक जाने वाला, ग़रज कि पलंग पर चौतरफा मच्छरदानी पड़ी हो। नर्म

गद्दे पर सुफेद और साफ चादर सजी हो, देखते ही जी अन्दर से ललचाये, बैठतेही लेटनेको जी चाहे, लेटतेही पेट भर कर नींद आये, सोतेही सिर्फ नाक से पेटरगम, पेटरगम की आवाज आये और अगर साँप भी सूँघ जाये तो आँख खुलने न पाये।

दिलफेंक—अच्छा! सुबह उठतेही?

लेमू०—आँख खुलतेही, मुँह धुलतेही बाला बाला, पहले एक चाय का प्याला।

दिलफेंक-और बाद अजाँ?

लेमू०—नहाने को गर्म पानी, एक तरफ पानी का टब दूसरी तरफ तौलिया और साबुनदानी।

दिलफेंक—और जब स्नान कर चुके?

लेमू०—तो फौरन् नाश्ते की घन्टी हो।

दिलफेंक—अच्छा! नाश्ते पर क्या हो?

लेमू०—बेजा हाफ ब्वायेल किया हुआ, तोस मसका लगा हुआ, सामने जैली का डिब्बा, तश्तरी में आमका मुरब्बा, दो चार बिस्कुट, एक दो केक, चाय जग में, दूध मग में, शक्कर वगैरह २।

दिलफेंक—मैं समझा। नाश्ते के बाद?

लेमू०—पढ़ाई।

दिलफेंक—कौनसी पढ़ाई, मतलबी या मज़हबी?

लेमू०—मतलबी।

दिलफेंक—यानी?

लेमू०—टेबुल पर हर वक्त इश्किया नाविलों की भरमार हो, जिनको पढ़ पढ़ कर हरे भरे बाग़ में आमदे बहार हो। दिल में इश्क की गुदगुदी हो, लबों पर मुहब्बत की हँसी हो,

आशिकों की दिल से क़दरदानी करे, जिसपर चाहे वे खटके मेहरबानी करे ।

दिलफेंक—गोया ज़की कहलाये या सख़ी कहलाये । मुहब्बत का भूखा जो कोई हुस्न के दस्तरख़ान पर तशरीफ लाये तो बोसों के नाम से दो चार प्लेट आइस्क्रीम के खाये, वह वापिस न जाये । क्यों ? ख़ैर, इसका नाम·········?

लेमू०—मिससनोवर यानी दिलथाम ।

दिलफेंक—और तुम्हारा नाम ?

लेमू०—लेमूनिचोड़ ।

दिलफेंक—अहा हा हा ! काश लेमूनिचोड़ के साथ इस लड़की का नाम मिसकचूमर होता तो क्याही मजा आता । ख़ैर तुम क्या पेशा करते हो ?

लेमू०—मास्टरी ।

दिलफेंक—आपके स्कूल का नाम ?

लेमू०—शरीफ विलडिंग ।

दिलफेंक—क्या इसने भी वहीं तालीम पाई है ?

लेमू०—जी हाँ ।

दिलफेंक—ओ, आई सी, यह तो एक नामी गिरामी स्कूल की तालीम याफ्ता लड़की है ।

लेमू०—फिर आपकी लड़की ?

दिलफेंक—क्या कहा मेरी बेटी ।

दिलथाम—हाँ, फादर ! तुम्हारी बेटी ।

मेम—(आकर) बस डीयर ! तुम्हारी बेटी ।

दिलफेंक—लाहोल विला । यह चकमा ? यह ढिठाई ? क्यों जी, तुम तो कहती थी कि मैं क्वाँरी हूँ, न मेरा कोई बाप है

न भाई, मेरी किसी से मुहब्बत न आशनाई। फिर यह जहेज़ में नौजवान लड़की कहां से निकल आयी ?

मेम – डीयर, तुम मेरा एहसान मानो, यह तुम्हारी खुशनसीबी है जो तुम्हें जहेज़ में नौजवान लड़की मिली है.

(जाना)

दिलफेंक – अजी, चली कहां ? जरा इसका फैसला तो करो।

लेमूनिचोड़ – अजी हजरत, क्यों नाहक फजीहता कराते हो, यह फैशन का जहेज़ है। इसे आँखे बन्द करके कबूल करलो।

दिलफेंक – नहीं साहब ! मैं इस तौहीनी को गँवारा नहीं कर सकता ! क्योंकि मैं एक खानदानी हूँ।

लेमू० – क्या तुम खानदानी ? और तुम्हारी मेम ?

दिलफेंक – साफ जाहिर है कि बाजारी।

लेमू० – तो फिर खान्दानी होकर बाजारी औरत से क्यों मुहब्बत करने लगे ? हजरत ! सच्च तो यह है कि जो लोग खान्दानी हैं वह अपने घरों की परदानशीन औरतों को छोड़ कर कभी फाहेशा औरतों पर नहीं मरते।

उत्तम से उत्तम मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच॥

जाइये, जल्द मेम साहिबा को समझाइये। कहीं ऐसा न हो कि कोई और मुसीबत आये, आपका बना बनाया घर बिगड़ जाये।

दिलफेंक – बहुत खूब, थैंक्यू ! मगर हाँ मिस्टर, जरा आप भी मेरे हमराह चलते, कुछ मेम साहब से सिफारिश करते।

लेमू० – अजी नहीं, आपही जरा सी कल मरोड़ दीजिये।

दिलफेंक—अजी नहीं। आपही थोड़ासा लिमूनिचोड़ दीजिये।

बेख़बर—(अन्दर से) बेटा, घसीटा, क्या अन्दर हो? दरवाज़ा खोलो।

लेमू०—हैं, यह कौन?

दिलफेंक—अरररररर यह तो मेरा बाप बेख़बर!

लेमू०—अच्छा तो हमें अन्दर छिप जाना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि बेख़बर को ख़बर हो जाय तो हमारा काम बिगड़ जाय।

दिलफेंक—मुसीबत पर मुसीबत—यह कम्बख़्त कहाँ से आगया?

बेख़बर—बेटा घसीटा, मैंने सुना है कि तूने एक ख़ूबसूरत लेडी से शादी की है।

दिलफेंक—जी हाँ। मगर वह कुछ ख़ूबसूरत नहीं है।

बेख़बर—क्या वाकई? मगर कमसिन तो है?

दिलफेंक—जी नहीं, वह तो बुढ़िया है।

बेख़बर—वाक़ई बुढ़िया? जब तो मेरा और उसका इन्टर-ड्यूस कराओ और तुम बजाय उसके आविन्द बनने के बेटे बन जाओ।

दिलफेंक—लाहोल विलाकूवत! बाप होकर अकल में यह फतूर!

बेख़बर—अबे गदहे! बेटा होकर इतना बेशऊर! सुन बेटा, मुझे आजकल औरत की सख्त जरूरत है। गोरी हो या काली, कुड़क हो या बच्चोंवाली, चाहे गदही हो, मगर औरत हो।

दिलफेंक—अब्बा जान ! इतने बूढ़े होने पर भी औरत का गुमान ?

बेखबर—वाकयी बूढ़ा हुआ तो क्या, मगर दिल तो रखता है जवान। मगर तू फिक्र न कर, तेरी शादी का मैं कहीं और इन्तजाम करता हूँ। चल मेरे साथ आ।

लेमू०—क्यों आगया न आखिर अपनी अस्लियत पर ?

दिलथाम—ठीक है, तुम्हारा तजुरबा, वाकई अगर यह जान्दानी होता तो इस जिल्लत पर भी हमारी मुहब्बत का दम न भरता, बल्कि शर्म से चुल्लू भर पानी में डूब मरता।

लेमू०—प्यारी ! डूब मरे या जिन्दा रहे, हमको तो है हलवे माण्डे से काम।

दिलथाम—और क्या, जब तक इसकी पॉकेट गर्म है, यह हमारा आका और हम इसके गुलाम।

लेमू०—और जिस रोज माल पानी खतम हो जाय ?

दिलथाम—अस्सलाम अलैकुम व अलैकुम अस्सलाम।

दिलफेंक—मगर ठहरो, मेरे बाप का इस लटारे से और मेरा इस टमटम से निकाह पढ़ाओ। बेटे को दामाद और बाप को ससुर बनाओ।

(निकाह होना)

अंक दूसरा-सीन चौथा

पटने का बाजार ।

(रणजीत और नूरुद्दीन का बातें करते हुये आना)

रणजीत—मिस्टर नुरुद्दीन ! वह पगड़ी जो तुम्हारे सर की आबरू थी, तुमने एक हिन्दू भाई का अंग ढ़ाकने के लिये उसके पाँव पर डाली थी, आज उसी पगड़ी के एवज तुम्हारा सच्चा सेवक मुसलमान जाति का हितचिंतक रणजीत, इस सोने के पर्वत से मिली सारा माया का आधा हिस्सा तुम्हारे प्रेम और मित्रताई के लिये तुम्हारे चरणों में भेंट करता है ।

नूरुद्दीन—खुदा आपकी इस नेकनियती को कायम रखे !

रणजीत—कायम है, यह नेकनियती हिन्दू के दिल में उस वक्त तक कायम है, जब तक भारतभूमि के सर पर हिमालय पर्वत का मुकुट रखा है; जब तक गंगा जमुना का प्रेम कायम है; जब तक वेद उपनिषद् की तालीम हिन्दू घर में मौजूद है:—

हिन्दू के साथ यों है मुसलमान का रहना ।
जैसे उचित है इस देह में प्राण का रहना ॥

नूरुद्दीन—एक घर में रहकर लड़ते रहें सैकड़ों बरस ।
अब तो मिलन कठिन है, बहुत आन का रहना ॥

रणजीत—मेरे अज़ीज़ दोस्त! भगवान की दया से मैं पटने के बाजार में उस आज़ादी से खड़ा हूँ, जहाँ से कर्ज खाहों से मुँह छिपा छिपा कर जाता था। लेकिन मोहनी अपना असली मकान छोड़ कर कहां गई? उसकी तलाश करनी चाहिये। गली गली, कूचा कूचा ढूँढ़ते हुये हमें सुबह से शाम हो गई। इकराम का भी कुछ पता नहीं चलता।

नूरुद्दीन—साहब! घबराने की कौनसी बात है, इस वक्त माशाअल्लाह आप इस कदर दौलतमन्द हैं कि दौलत के बल पर यह पटना तो क्या सारे हिन्दुस्तान में मोहनी और इकराम की टोह लगाने के लिये आप कामयाब हो सकते हैं। हां, देखो वह सिपाही इस तरफ आता है, शायद इसे कुछ खबर हो। सिपाही! इधर आओ।

इकराम—क्यों? क्या है?

नूरुद्दीन—तुम्हें कुछ मालूम है, कि राजवाड़ी में एक औरत मोहनी नामकी रहती थी?

इकराम—मोहनी बी० ए०? क्या रणजीत की बीबी तो नहीं?

नूरुद्दीन—हाँ हाँ, वही।

इकराम—जा भाई जा! अपना काम कर, उसका हाल मुझ से न पूछ! हा! अफसोस।

रणजीत—क्यों क्यों? क्या वह मर गई? उसके पास एक वफादार मुसलमान नौकर भी था, उसका नाम इकराम..........

इकराम—हैं, इकराम? कौन कौन? मेरे मालिक?

रणजीत—कौन? इकराम, इकराम, यह मैं क्या देख

रहा हूँ, मेरे नमकहलाल, वफादार इकराम ! मोहनी की कुछ खबर—

इकराम—अजाब खाना नशीं है सवाब के घर में।
अन्धेरा आकर बसा आफताब के घर में॥
मकाने होश में हंगामये तगाफुल है।
जहाँ था मश्कने गुल अब मज़ारे बुलबुल है॥

रणजीत—अर्थात् ?

इकराम—अजीत मक्कार ने मोहनी माता को बहका कर अख़बार में आपके मरने की झूठी खबर पढ़ाई और मोहनी माता को बेवा साबित करके सरप्रताप से उसकी शादी कराई।

रणजीत—और मोहनी ने भी मंजूर करली ? तुम भी कुछ न बोले इकराम ?

इकराम—मालिक ! मैंने तो अपनी सारी जायदाद बेच कर मोहनी की खिदमत में खर्च कर डाली। आख़िर मेरी मरहूम बीवी की आख़िरी निशानी एक जेवर था, वह भी बेचकर आस्ट्रेलिया के सरकारी मुहकमें में आपके जीने मरने की सच्ची ख़बर मँगाने का तार भेजा।

रणजीत—क्या मोहनी इस क़दर अधीर होकर मेरी मृत्यु का इन्तज़ार कर रही थी, कि तेरे तार का जवाब आने तक भी ठहर न सकी ?

इकराम—नहीं मालिक, नहीं ! अजीत बदमाश के कहने से उन्होंने मुझे भी घर से निकाल दिया। आखिरकार मैंने लाचार होकर पुलिस में नौकरी कर ली।

रणजीत—अफ़सोस ! स्त्रीजाति पर भरोसा करने वाले मूर्ख पुरुषो ? तुम विश्वास के बहाने से ठगे गये हो।

मेरी पत्नी ही ने पत को मेरे आख़िर मिटा डाला।
मेरे घर की ही अग्नि ने मेरे घर को जला डाला॥

अच्छा कुछ परवाह नहीं। तू जा! मोहनी से किसी बहाने से मिलकर उसका इरादा पूँछ, कि वह क्या चाहती है? इससे पहले कि मैं क़ानूनी दरवाज़े की जंज़ीर हिलाऊँ, एकबार उससे दरियाफ्त करलूँ।

इकराम—बहुत खूब, मैं अभी जाऊँगा।

नूरुद्दीन—चुप रहो। सामने से कोई आता है।

(कामनी और मोहनसिंह का आना)

मोहनसिंह—मेरी आबरू जाने का सन्ताप न कर। हैं! यह कौन? रणजीत, प्यारे मित्र! रणजीत?

रणजीत—कौन? मित्र मोहनसिंह? कहो भाई, क्या हाल है?

मोहनसिंह—प्रेमी बन्धु, प्रेम के घटा टोप अन्धेरे में भटक रहा है।

रणजीत—प्रेम! मोहनसिंह! इस अनर्थकारी वस्तु का नाम न लो, यह तो केवल पुरुषों के खिलाफ एक तलवार है जो सुन्दर स्त्री के स्वरूप और वर्तमान आशाओं के अधीन की गयी है। आह! मोहनसिंह, प्रेम संसार के बाजार में एक खोटा हीरा बिक रहा है। संसार की फुलवारी में श्रद्धा और भक्ति की सुगन्धि से रहित एक फूल खिल रहा है। छोड़ दो, छोड़ दो! इस प्रेम से नेकी और निबाह की आशा छोड़ दो।

मोहन०—ठीक है! लेकिन जिस प्रेम के विरोध में अपना ऐसा विचार प्रकट करते हो, वह झूठा प्रेम है, सच्चा नहीं। जिस प्रेम में स्वार्थत्याग और आत्मबलिदान नहीं वह प्रेम नहीं, बल्कि दुराचार है। अगर प्रेमकथा पढ़नी है

तो यह जीती और बोलती हुई प्रेम पुस्तक तुम्हारे सामने मौजूद है।

रणजीत—महाशय! यह कौन है?

मोहन०—सरप्रताप की बेटी, "कामिनी"।

इकराम—बस बस मालिक, मोहनी उसी सरप्रताप की बीवी बनाई गई है।

कामिनी—हे भगवान! यह मैं क्या सुन रही हूँ

रणजीत—परन्तु कामिनी ने मर्दाना वस्त्र क्यों धारण किया है?

मोहन०—कामिनी ने डाक्टरी की डिगरी पास की है। एक प्राइवेट मामिले की वजह से मर्दाना लिबास पहनने पर विवश है। यह सरप्रताप की फेमली डाक्टर हैं और प्रति-दिन वहाँ आया जाया करती हैं।

रणजीत—कारण?

मोहन०—मैं आपसे पोशीदह बयान करूँगा।

कामिनी—अफ़सोस! मोहनी जिसे अजीत ने विधवा मशहूर करके मेरे पिता से ब्याह दी, वह आपकी स्त्री है?

मोहन०—हाँ! इनकी—यही वह मित्र हैं, जिनके वियोग में मैं तुम्हारे प्रेम की प्रार्थना सुनने में आना कानी किया करता था। चलो मित्र, सेवक के घर चलो, और बाकी हाल वहाँ कहे सुने जायँगे।

रणजीत—तो इकराम! तुम जाओ और उस बात का जवाब लेकर मिस्टर मोहनसिंह के घर पर जल्द आओ।

इकराम—बहुत खूब जनाब!

मोहन—चलो।

रणजीत—नूरुद्दीन चलो।

इकराम—मगर मालिक ! फिर कहीं अस्ट्रेलिया न चले जाना !

(सबका जाना)

अंक दूसरा-सीन पांचवां

आरास्ता कमरा ।

(मोहनी बैठी हुई है सहेलियां गाकर चली जाती हैं)

सहे०— गाना ।

बांका छैला कन्हइया—मोरी दइया—वही गोकुल का बसइया—
बँसुरिया प्रेम की खूब बजाई झट पट जमुना के तीर—
मोहन छिपाय लियो चीर-सखिन मन नाहीं धीर ॥ बांका०—
सखियां सखीरी घबरायें-बिना चीर घर कैसे जायें—
करजोड़ तोको समझायें सभी छूई चन्दा—
लाजसे सखियां जलभुन गुइयां-सब छब सइयां—

मोहनी—आह ! यह छलनामयी आशा की आवाज है जो जा-मृतावस्था में मेरे कानों में प्रतिध्वनित होती है । यह सुख का

झूठा स्वप्न है जो निद्रावस्था में मेरी आँखों को धोका दिया करता है। कौन ?

लीलावती—(अन्दर से) मैं हूँ दासी !

मोहनी—लीलावती ?

लीलावती—हाँ देवि ! लीलावती, बाहर एक साधु महाराज बड़ी देर से झगड़ा कर रहे हैं।

मोहनी—झगड़ा किस कारण ?

लीलावती—वह आप से मिलने की इच्छा लेकर दरवाजे पर आसन जमाये विराजमान हैं।

मोहनी—हाँ ! उन्हें आने दो।

लीलावती—जो आज्ञा !

मोहनी—साधु और मोहिनी को पहिचाने, आश्चर्य है !

लीलावती—लो ! यह साधु महाराज आगये।

(साधु के वेश में इकराम का आना)

मोहनी—आइये ! साधु महाराज, आइये ! आसन पर विराजिये !

इकराम—लाज और वफ़ादारी के शत्रु कहाँ रहते हैं ? क्या इसी मकान में ?

मोहनी—हैं ? यह क्या कहा महाराज !

इकराम-कुछ नहीं। मोहनी ! तुम्हारी किस्मत का सितारा जो डूब चुका था, वह फिर निकल आया।

मोहनी—अर्थात् ?

इकराम—इसे पढ़ो, इसके अर्थ समझ जाओ।

(तार देना)

मोहिनी—हैं ! मैं यह क्या पढ़ रही हूँ ? मेरे हाथ पाँव

निर्जीव हो गये। कौन?(इकराम नकली दाढ़ी दूर कर देता है) कौन ? इकराम, तू ?

इकराम—हाँ बाई साहब ! इकराम।

मोहनी—रणजीत ज़िन्दा है ? यह तार तुझे कब मिला ?

इकराम—मुद्दत हुई।

मोहनी—और वह यहाँ आ रहा है ?

इकराम—जी हाँ।

मोहनी—अब मैं क्या करूँ ?

इकराम—जो एक शर्मशार बीवी को करना चाहिये।

मोहनी—यानी !

इकराम—शर्म की दरिया में डूब मरना चाहिये।

मोहनी—क्यों ?

इकराम—इसलिये कि आपने हिन्दूधर्म को कलंकित किया है, आपने शास्त्र के नियम को तोड़ा है। आपने दौलत की लालच में आकर अपनी अस्मत और पारसाई को दाग़ लगाया है।

मोहनी—अरे बूढ़े ! तू क्या कहना चाहता है ? मनहूस जा, इस घर से निकल जा, नहीं तो इस समय.....

(पिस्तौल निकालती है)

इकराम—[पिस्तौल निकाल कर] बस ख़बरदार !

(इकराम का जाना और मोहनी का खामोश रह जाना)

मोहनी—हाँ, ! अब वह आ गया, मेरे रास्ते में बहुत से काँटे बिछ गये, परन्तु मुझे निराश नहीं होना चाहिये। सरप्रताप को इस धन से हीन करदूँ, फिर रणजीत से निपट लूँगी। (बैठ जाती है)

[सरप्रताप का आना]

सरप्रताप—प्रिये ! आज तुम उदास मालूम होती हो, चेहरा कुछ उतरा हुआ है। क्यों ?

मोहनी—(स्वगत) ओ बूढ़े ! तू मेरा दिल नहीं बहला सकता। तुझसे शादी करने के बाद आज तक मैंने सुख का स्वप्न भी नहीं देखा। (प्रगट) मैं बीमार हूँ, मेरी तबीयत अच्छी नहीं है।

सरप्रताप—प्रिये ! मेरे नियत किये डाक्टर अभी आ रहे हैं, उनकी दवा इस्तेमाल में लाओ, अपने दिल से यह ख्याल भुलाओ। लो ! वह डाक्टर साहब भी आ गये।

[डाक्टर के वेश में कामिनी का आना]

सरप्रताप—डाक्टरसाहेब ! जरा देखिये, इनको क्या हो गया है।

मोहनी—(पागलों की तरह) ! तुम आ गये ? तुमने क्या.....किया ? नहीं नहीं, मोहनी का हृदय कठोर है, वह पुरुष से ज्यादा.....हाँ, हाँ, ! मैं तुमको पीस डालूँगी। तुम्हें चबा डालूँगी, तुम्हारी आशाओं को पददलित कर दूँगी। आओ, आओ ! मुझ से लड़ो।

[बेहोश हो जाती है]

सरप्रताप—डाक्टर साहब ! क्या यह पागल हो गई ?

कामिनी—जाइये, शीघ्र एक गिलास पानी लाइये। उठिये बाई साहेब, उठिये !

(सरप्रताप पानी लेने जाता है, आहिस्ता आहिस्ता रणजीत और इकराम दाखिल होते हैं, रणजीत एक तरफ और इकराम दूसरी तरफ छिप जाते हैं]

मोहनी—आह ! कौन ? डाक्टर, मेरा सर चकरा रहा है। मैंने जवान को मुर्दा समझ कर बूढ़े से विवाह किया, परन्तु आह ! हाँ !-डाक्टर मैं बीमार हूँ।

कामिनी—मैं आपको दवा दूँगा।

मोहिनी—नहीं मुझे दवा नहीं चाहिये। मुझे जो रोग है उसका इलाज सिर्फ तुम हो। तुम्हारी मनोहर सूरत, तुम्हारे कटीले नैन, आह; मुझे मारे डालते हैं। डाक्टर, मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। अपने मधुर वचनों से मुझे आशा दो, प्रेम की भिखारिणी को प्रेम देकर उसका इलाज करो।

कामिनी—हैं हैं ! यह आप क्या कह रही हैं ?

मोहनी—मैं सच कहती हूँ। आह डाक्टर, इधर आओ।

कामिनी—ख़बरदार !

(सरप्रताप का पानी लेकर आना)

सरप्रताप—क्या है, क्या है ?

मोहनी—देखो ! स्वामी, निर्लज्ज डाक्टर मेरे मुख का चुम्बन करना चाहता था।

सरप्रताप—कौन ? तू ! (मारना चाहता है, मोंछ उखड़ जाती है] है, यह क्या ! कामिनी ?

मोहनी—धोखा ! बुड्ढे दग़ाबाज़ ! यह तेरी शरारत है ! यह तेरी जालसाज़ी है। (थप्पड़ मारती है) चल हट, सामने से चला जा।

कामिनी—बस ख़बरदार ! !

[मोहनी भागती है, सामने से इकराम निकलता है, दूसरी तरफ भागती है, रणजीत नज़र आता है, मोहनी हैरान रह जाती है] टेबला।

अंक तीसरा-सीन पहला

अजीत का मकान

(अजीत का स्वगत बोलते हुये आना)

अजीत—कैसे आश्चर्य की बात है ? न कामिनी मुँह बोलती है और न बोलती है ! दो दिन हो गये, न पास आती है और न मुझे पास जाने देती है। कोई है ?

(नौकर का आना)

नौकर—जी ! क्या आज्ञा है ?

अजीत—जाओ ! कामिनी को मेरे पास भेजो।

नौकर—जो आज्ञा ! (जाना नौकर का)

अजीत—आज इसी समय फैसला किये देता हूँ, उस हठीली के हठ को तोड़े देता हूँ। (मालती आती है) आओ प्रिये कामिनी ! मुझे आश्चर्य है, कि आज दो दिन हुये, न मुख से बोलती हो और न मुझे पास आने देती हो।

मालती—कारण, मैं तुमसे बात करने में अपना अपमान समझती हूँ।

अजीत—क्यों ! मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, मेरा प्रेम, मेरा धन तुम्हारे अपमान को मान से बदल सकता है।

मालती—मूर्ख ! विषयी, लम्पट, अन्धे ! न तू मेरे अपमान को मान से बदल सकता है और न मुझे उसकी जरूरत है।

अजीत—हैं ? यह क्या कहा ? कामिनी ! कामिनी ! तू मुझे पहिचान मैं कौन हूँ ?

मालती—दुष्ट ! मैं तुझे और तेरे कर्तव्य को अच्छी तरह पहिचानती हूँ। तू ने एक विदेशी को मुर्दा बताकर उसकी सती स्त्री को असती और कलंकिनी बना दिया। एक देवी को राक्षसी में परिणत कर दिया। तेरे करतूतों को आज से नहीं, बहुत समय से जानती हूँ।

अजीत—बस खबरदार ! अब बोली और मैंने।

मालती—तू ने ! क्या, बोल, बोल; (हन्टर से मारती है)

अजीत—हैं ! अरे यह क्या करती हो। आह ! मैं मरा।

मालती—मर अच्छी तरह मर।

अजीत—यह क्या कामिनी !

मालती—कौन कामिनी ! इस पापी की सती भामिनी।
नहीं, नहीं, मैं हूँ तब जग हित क्रूर यामिनी॥
हूँ तेरे आशा तरु के हित प्रबल दामिनी।
यह कामिनी निहार इसे है, नहीं "कामिनी"॥

(मालती अपना घूंघट उलटती है)

अजीत—कौन मालती ?

मालती—हाँ मालती, तेरे संसार के लिये प्रलय, तेरे प्राणों के लिए यमदूत।

अजीत—आह धोका ! धोका ! कामिनी कहाँ है ?

मालती—कामिनी ! कैसी कामिनी ? मैं तेरी पत्नी और तू मेरा पति है।

अजीत—यह झूठ है, मेरा विवाह कामिनी के साथ हुआ है।

मालती—नहीं ! मेरे साथ । कामिनी की दासी के साथ उसकी पवित्र आशाओं, सच्चे प्रेम और विमल सतीत्व पर बलिदान होने वाली उसकी बाँदी मालती के साथ तेरा विवाह हुआ है । पापी ! भगवान ने तेरे अभिमान का अंत और तेरी शरारत को चूर चूर करने के लिये तुझे मेरे पल्ले से बाँध दिया है ।

कैसी ही क्यों न दशा हो वह बदल जाती है ।
दो घड़ी बाद चढ़ी धूप भी ढल जाती है ।

अजीत—आह ! नहीं, मालती, मुझ पर दया कर ।

मालती—दया ! क्या तूने भी कभी किसी पर दया की है ? क्या तू ने भी कभी किसी की प्रार्थना पर दो आँसू टपकाये हैं ? यदि ऐसा किया हो तो इस शब्द को मुँह से निकाल अन्यथा इसका कोई एक भी अक्षर तेरे लिये नहीं बना है । तू ने अपने काम और लोभ के कारण कितने जीवों को दुख और क्लेश में फँसाया ।

अपना दुःख, दुःख है जगत में, दूसरे का दुःख नहीं ।
है खुशी अपनी मुकद्दम बेकसों का सुख नहीं ॥

अजीत—मालती ! मैं हार गया । मुझे क्षमा कर, मेरा पीछा छोड़ दे ।

मालती—मैं तुझे तमाम संसार मिलने पर भी नहीं छोड़ूँगी । तू मेरा पति है, चल, घर में चल ।

अजीत—आह ! मार डाला, अच्छा, चलता हूँ बाबा, चलता हूँ ।

(मालती अजीत को मारती हुई ले जाती है)

अंक तीसरा-सीन दूसरा

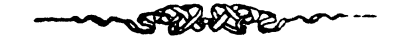

बदलू प्रसाद का मकान।

बदलूप्रसाद—हत् तेरी किस्मत की दुम में मेरी घीवी के घाघरे का नाड़ा। जिसने शादी की मुसीबत के अखाड़े में पछाड़ा। खूबी ये कि किस्मत से जोक मिली तो बच्चे निकालने की मशीन! बूढ़ों के लिये मेगज़ीन और जवानों के लिये दुर्बीन। क़दीम तारीख का कलेन्डर। पेट जैसे इंजन का सलेन्डर। यह औरत तो मेरेही काबिल है, औरत क्या है; यारो! फिक्स वील साइकिल है।

मोती—(अन्दर से) बदलू! ओ मुये बदलू!

बदलु—लो बच्चा, बदलु! आ गई तुम्हारी ख़ाला। कम-बख्त! आध घण्टा भी आराम से नहीं सोती।

मैफ़िले राज में पोखराज परी आती है।
नये फैशन से हिमाकत से भरी आती है॥

(मोती अपनी लड़की चम्पा के साथ आती है)

मोती—अरे मुये, तेरे घर हर वक्त पैसों का काल है। इतना दौलतमन्द होने पर भी कहता है कि रुपयों का ज़वाल है, कुछ अपनी बेटी चम्पा फुलझड़ी का भी ख़याल है?

बदलू—अरे! फिर वही फुलझड़ी! फुलझड़ी! तेरी लड़की तो खुद बोसाबाजी, दीदाबाजी, नज़रबाजी में स्पेशल ट्रेन है। वह खुद अपनी मरजी के मुताबिक कोई अंगरेजी जन्टिल-मैन पसन्द कर लेगी, नाहक तू क्यों बेचैन है?

मोती—तो क्या लड़कियों के सहारे पर माँ बाप बात छोड़ देते हैं ? और ऐसी बेवकूफी से उसके पेट भरते हैं ?

बदलू—अरी ! आज कल के शरीफ़ तो अपनी लड़कियों को पबलिक बैंक समझते हैं। ओह, इसकी चर्बी जवानी से मेरा दिल होता है बेज़ार। तोबा तोबा ! यह औरत क्या है, गोया मुरब्बे की चटनी या नीबू का अचार।

मोती—चल मुये तेरे मुँह पर मारूँ पैंजार बेटी चम्पा ओ चम्पा !

चम्पा—(आकर क्या कहती हो ?

मोती—बेटी ! इस शहर के चन्द जवान तुझ से शादी के ख़्वाहाँ हैं। उनमें से तू किसको पसन्द करती है ? जल्द बयान कर।

चम्पा—एक को भी नहीं।

मोती—एक को भी नहीं ? तो फिर तेरी शादी किससे की जाय ?

चम्पा—शादी से तो होती है ख़ाना बरबादी, मुझे तो चाहिये खुली आज़ादी।

बदलू—यानी ?

चम्पा—मैं तो उस जन्टिलमैन को चाहूँगी, जो हर वक्त मेरा दम भरे। मैं झूठ भी कहूँ तो उस पर यकीन करे। मैं चाहे उसके सामने गैर मर्दों से मिलूँ, मगर वह मेरी हर तरह तारीफ़ करे।

बदलू—इसके अलावा और कुछ !

चम्पा—सुनिये ! दीदये बाज़ी, बोसा बाज़ी, नज़रबाज़ी वग़ैरह वग़ैरह जितनी बाज़ियां हैं, सब खेलूँ, मगर वह इनकार न करे। जिसको यह सब शर्तें मंजूर हों, उससे मैं शादी

करने को तैय्यार हूँ। वरना सब मर्दों से बेजार हूँ।

बदलू—यह प्रोग्राम तो बिलकुल बराबर है। समझा समझा, ऐ मेरी बैरिस्टरी ऐटला बेटी! समझा। बस तू अपने कानून और दफा के मुताबिक शौहर तलाश कर। चलो बीबी! हम तुम चलें।

(जाना दोनों का)

चम्पा—चलो जी! यह भी अच्छा हुआ कि माँ बाप ने मेरी ही मरजी पर बात छोड़ दी। मैंने तो पहिलेही व्याह शादी के एजेन्सी में पाँच रुपया फीस और अपना फोटो भेज रखा है। अगर किसी जन्टिलमेन को मेरी शर्तें मंजूर हुई और मेरा फोटो देखकर वह मुझ पर आशिक हो गया तो उम्मीद है कि एजेन्सी से जरूर कोई ख़बर आयेगी।

(जाना)

अंक तीसरा-सीन तीसरा

मकान एजेन्सी।

(जानकीबाई का आना)

जानकीबाई—बॉय! कुर्सी टेबुल जल्दी साफ करो!

बॉय—आलराइट मैडम!

(टेलीफोन बजता है)

जानकी०—वॉय, देखो, बाहर कौन है ?

वॉय-सरकार ! एक आदमी आप से मिलना चाहता है ।

जानकी०—अच्छा ! अन्दर ले आओ ।

बेख़बर—(आकर) तसलीम!

जानकी०—बन्दगी । आपका नाम ?

बेख़बर—बेख़बर ।

जानकी०—कुर्सी पर बैठ जाइये । कहिये क्या हुक्म है ?

बेख़बर—मुझे एक फ़ैशनेबुल खूबसूरत औरत की ज़रूरत है ।

जानकी०—पहिले आप यह बतायें कि आप किस क़दर जायदाद के मालिक हैं ?

बेख़बर—एक लाख बीस हज़ार की जायदाद है ।

जानकी०—बहुत बेहतर है । फीस के पाँच रुपये दाखिल कीजिये, मैं अभी आपको फोटो दिखाती हूँ । जो औरत आप को पसन्द हो, उसको बुला कर अभी बात चीत करा देती हूँ ।

बेख़बर—पाँच रुपया ?

जानकी०—हाँ ।

बेख़बर—यह लीजिये । (रुपये देता है)

जानकी०—(फोटो वाली किताब निकाल कर दिखाना) देखिये इसकी उम्र बहुत छोटी है ।

बेख़बर—(नौकर की तरफ देख कर) किसकी ? इसकी ?

जानकी०—ओ यू फूल ! इस फोटो की ।

बेख़बर—अच्छा ! अच्छा ! फोटो की ?

जानकी०—हाँ। इसकी उम्र बहुत छोटी है।

बेख़बर—क्या कोई पाँच छ महीने की?

जानकी०—ओ यू नहीं, क़रीब १५ वर्ष की होगी। चलो चलो! पसन्द करो।

बेख़बर—मुझे तो यह लड़की पसन्द है।

जानकी०—बहुत खूब! अभी बुलाती हूँ।

बेख़बर—तो क्या मैं जाऊँ?

जानकी०—नहीं नहीं, मैं टेलीफोन के ज़रिये अभी बुलाती हूँ।

बेख़बर—(नौकर से) जा बे! जाकर बुला ला!

जानकी०—(टेलीफोन में) हे लो! जानकी बाई! एस! डीयर चम्पा, कमहियर। लीजिये! वह आ रही है। हाँ! आपकी उम्र कितनी होगी?

बेख़बर—तक़रीबन! साठ बरस दो चार महीने ज्यादा या कम।

जानकी०—खैर-चूँकि आप एक मालदार शख़्स हैं। इस लिये कुछ ज्यादा नहीं है।

बेख़बर—जी हाँ! डाक्टर लोग तो अब भी नाबालिग होने का सार्टिफिकेट देने को तैयार हैं।

जानकी०—चूँकि आप मालदार हैं। लीजिये वह भी आ गई (चम्पा का आना) डीयर, मैंने तुमको इसलिये तकलीफ़ दी है कि यह साहब आप से शादी करना चाहते हैं।

चम्पा—मुझसे! अ हा हा हा—

बेख़बर—अ हा हा हा

जानकी०—ख़ामोश।

चम्पा—यह कोई मालदार आदमी है?

जानकी०—एक लाख बीस हजार की हैसियत का आदमी है।

चम्पा-ओ, जब तो कुछ दिन जिन्दगी के मज़े में गुज़र जायेंगे। फिर और कोई जन्टिलमैन देखूँगी।

बेखबर-और आपकी तारीफ!

चम्पा-बन्दीको लौंड़ी तसव्वर कीजिये।

बेखबर--तो इस खाकसार को भी अपना लौंड़ा ही समझिये।

जानकी० इधर देखो, यह बदलूप्रसाद जो इस शहरके बड़े रईस हैं उनकी लड़की हैं; इनका नाम है मिस चम्पा।

बेखबर-लड़ी लड़ी, किस्मत लड़ी।

चम्पा—सबसे पहिले आपको मेरी चन्द शर्तें मंजूर करनी पड़ेंगी।

बेखबर—फर्माइये! आपकी क्या क्या शर्तें हैं?

चम्पा – अव्वल तो यह कि बापकी तरह आपमेरी इज्ज़त करें बेटी की तरह मेरी मुहब्बत करें। साथही अगरमं किसी न्यूलाइट के जन्टिलमैन से मिलूँ तो दिल में ज़रा भी ख्याल न करें, किसी से प्राइवेट बात करूँ तो आप पालतू कुत्तेकी तरह बाहर खड़े मेरा इन्तज़ार करें, जब मैं अपनी लाल लाल आंखें दिखाऊँ तो फौरन डरें। मैं अन्दर जाऊँ या बाहर, मगर आप किसी क़िस्म के मलाल न करें,

बेखबर—वाह, ये शर्तें कैसे मंजूर होगीं, क्या इन्हीं के लिये बादशाही है?

जानकीबाई—वो दस,तुमको औरत के हम ख्याल होना चाहिये। यह तुम्हारा सबसे पहिला फर्ज और फैशन है।

बेखबर—फर्ज है? और साथही फैशन भी! तो मुझे मंजूर है।

चम्पा-अच्छा! अब मैं आपका इम्तहान लेती हूँ कि आप किस कदर तन्दुरुस्त हैं।

बेखबर-बड़े शौक से, मैंतो अच्छा खासा हूँ।

चम्पा-अच्छा तो जरा चल चलकर बताइये।

बेखबर-आप शादी के लिये शौहर पसन्द कर रही हैं या कोई घोड़ा खरीद रही हैं?

चम्पा—यह क्या वाहियात बात! चलते हो या नहीं?

बेखबर—चाल! चाल यह लीजिये।

चम्पा—खैर, अब उठ बैठकर अपनी ताकत दिखाओ।

बेखबर—यानी वरजिश करूँ। यह लीजिये।

चम्पा—अच्छा! अपने दाँत दिखाओ।

बेखबर—देख लीजिये। पूरे पचीसी हैं। बालिग हो गया हूँ, तमाम जायदाद मेरी ही है।

चम्पा—आलराइट, मंजूर।

जानकी०—क्यों यह शौहर क़बूल है?

चम्पा—खैर मंजूर है, चूँकि मालदार भी है?

बेखबर—अच्छा तो इजाज़त है?

जानकी०-खैर आप लोग जा सकते हैं।

चम्पा—तसलीम!

जानकी०—आदाब!

(जाना)

अंक तीसरा-सीन चौथा

दीवानखाना।

(सरप्रताप दीवाना बार लेटा हुआ है, कामिनी बठी हुई है)

सरप्रताप—छोड़ दो, छोड़ दो, यह धन उसीको देदो, परन्तु मुझे छोड़ दो। खड़ा हो जाताहै) कामिनी! क्या माँगती है? ठहरजा मोहनी, मैं समझ गया। चन्द्रमा के धब्बे मुझे नज़र आ गये। वह देखो, कैसी मधुर गाने की आवाजें आ रही हैं। बन्द करदो, द्वार बन्द करदो, उसको आने से रोक दो मैं सरप्रताप हूँ, मैं आज्ञा देता हूँ। यदि वह आस्ट्रेलिया से लौट आया है, तबभी; मैं रोकने की आज्ञा देता हूँ। उसको रोकना होगा, यह मेरा घर है, वह कैसे आसकता है। उसे आनेका क्या अधिकार है? आह! इस बूढ़ी अवस्था में मोहनी! तू मुझे क्यों सताती है? क्या चाहती है? ओह! रहने दो २ अब इन बातों से प्रयोजन ही क्या है। मैं! मैं मार-डालूँगा, हत्या कर डालूँगा! परन्तु (रणजीत और इकराम का आना) तू कौन है? ओ आस्ट्रेलिया से भटक कर लौट आने वाली आत्मा! मैंने त्याग दिया, मैंने छोड़ दिया। मुझे मोहिनी और धन दोनों में से किसी एक वस्तु की भी जरूरत नहीं है।

रणजीत—आपका यह क्या हाल है? मेरे योग्य कोई सेवा बताइये।

सरप्रताप—सेवा ? सेवा यही, कि वह पिशाचिनी, नहीं नहीं, बचाओ, बचाओ। इन भयानक मूर्तियों से बचाओ। यह कौन है ? कामिनी ! परन्तु नहीं अजीत, तूने मेरे अमृतरस में विष मिला दिया।

इकराम—अफ़सोस ! सरप्रताप दीवाने हो गये।

रणजीत—बहिन कामिनी ! रोना निरर्थक है। यह इनकी अन्तिम अवस्था है। भगवान से इनके लिये दया की प्रार्थना करो।

कामिनी—आह ! भाई रणजीत, एक अजीतने दो घरों का नाश करादिया। एक सती को कलंकिनी बना दिया। आह, गरीब मालती मेरे लिये जीवन भर अग्नि में जलने के लिये चली गई।

सरप्रताप—आह ! अग्नि, तृष्णा, नहीं मैं जल नहीं चाहता ! जल सूखे हुये वृक्षों को हरा कर सकता है, जल तड़पने वाली मछलियों को जीवन दे सकता है, परन्तु मैं मृत्यु चाहता हूँ। मैं तुझे पहचानता हूँ, तू कामिनी है। यह आस्ट्रेलिया में मर जाने वाला रणजीत—और यह उसका नौकर इकराम है। मैं सबको पहचानता हूँ। मैं सरप्रताप हूँ। मैं तेरा गला घोट डालूँगा। मैं तेरी जान ले लूँगा। मोहनी ! तूने मुझे थप्पड़ मारा, आह ! अन्तिम अवस्था में विवाह करने का परिणाम यही होता है। आह ! स्त्रीजाति अवश्य इस दुनिया के मौसम की तरह होती है जो जाड़ा, गर्मी और बरसात की तरह अपनी हालत भी तबदील करती हैं। छोड़ दो २ जाने दो। मैं इसकी जान लूँगा। मैं अपना प्राण दूंगा ! मैं ! मैं ! मैं....

(कपड़े फाड़ कर भागता है)

कामिनी—पिताजी ! पिताजी !

(सब का पीछे २ जाना)

अंक तीसरा-सीन पाँचवाँ

बेख़बर का मकान ।

(बेख़बर का बड़बड़ाते हुये आना)

बेख़बर—बाहरे मेरी जोरू और बाहरे मैं। यारो !-

जोरू ने मेरी, मुझको तो बेचैन कर दिया ।
और मैंने अपने आपको गुडमैन कर दिया ।
पूछा जो उसने मुझसे फैशन की है ख़बर ।
मैंने कहा कि उसको तो बे लैन कर दिया ॥

क्या कहूँ यारो, इस इंगलिश फैशन बीबी ने तो मेरा नाक में दम कर रखा है। मैंने तो समझा था कि समझाने से ठीक हो जायगी-मगर कहाँ! मैं अगर हिन्दी भाषा पढ़ने को कहता हूँ तो यह इंगलिश नाविल खरीद लाती है। और मैं जो खद्दर पहिनने को कहता हूँ तो यह रेशमी गवन सिलाती है। ग़रज़ कहीं न कहीं से जो चीज़ चाहती है, ले ही आती है।

बदलू प्रसाद—(आकर) वाह रे मेरी किस्मत और वाह रे मैं ! लड़की को जरा धमकाया तो उसने घर से डेरा डंडा उठाया। अब नहीं मालूम, किस जन्टिलमैन से विवाह कर गई या यों ही बे मौत मर गई। मैं आज बेख़बर के मकान पर इसलिये आया हूँ कि मैंने सुना है कि बेख़बर ने मेरी लड़की से शादी कर ली है।

बेख़बर—शादी कर ली है या खाना बरबादी कर ली है ?

बदलू—अरे ! पर किस तरह ?

बेख़बर—किस तरह ! तुम्हारी लड़की के कारण।

बदलू—मगर मेरी लड़की से तुमको शादी करने का क्या हक़ था ?

बेख़बर—अरे भाई ! मुझे हक़ नहीं था, मगर मेरे रुपये को तो हक़ था। बोल अब तू क्या चाहता है ?

बदलू—मेरे दोस्त ! शराफत इसी का नाम है कि तुम मेरी लड़की की शादी को उधेड़ डालो। मैं उसकी शादी शीघ्र किसी दूसरे नौजवान से करूँगा।

बेख़बर—ले जा भाई, ले जा। यह तो मुझे इश्कबाजी और नजर लड़ाना सिखाती है। ऐसी जोरू से तो मैं अकेला ही अच्छा था। इधर आ, मेरी बी० ए० एल० एल० बी० लेडी ! आजसे मैंने तेरी शादी की गाँठ को खोल डाला। अब तू अपने बाप के पास वापिस चली जा।

बदलू—अरे वाह रे मेरी लड़की ! और वाह रे मैं !

बेख़बर—अरे वाह रे मेरी किस्मत ! और वाह रे मैं !

(जाना सबका)

अंक तीसरा-सीन छठवां

आरास्ता कमरा।

(सामने एक बड़ी तिजूरी रखी हुई है मोहनी गाती है)

मोहनी— गाना

खाक में मिलवा दिया मिल मिल के क़ातिल ने मुझे।
हसरते दिल का गिला है हसरते दिल से मुझे॥
एक तरफ बैठी हूँ-कुछ कहती नहीं सुनती नहीं।
फिर उठाते हो भला क्यों अपनी महफिल से मुझे॥
मैं तो कायल ही न थी फूटी हुई तकदीर की।
मानना इस को पड़ा टूटे हुये दिल से मुझे॥
हिचकियां लेते ही लेते दम लबों पर आगया।
याद करते हैं खुदा जाने वह किस दिल से मुझे॥
वह तो मैं ही थी कि फर्श राह होकर रह गयी।
तुमने तो सौ बार उठाया अपनी महफिल से मुझे॥

मोहनी—आह! संसार में अब क्या रह गया! इस आशा पर कि रणजीत मर गया, दूसरा विवाह कर लिया।

दुःख को छोड़कर सुख के मार्ग पर चलने के लिये दौलत, संसार के विलास का साथ किया। परन्तु सब व्यर्थ निकला। किसीने कहा है कि संसार में रह कर जो भोग वासनाओं से दूर रह सकता है, वही सुख और शान्ति प्राप्त करता है। जिस प्रकार कि मुझे इस धन से जो रणजीत को छोड़ कर सरप्रताप को पागल बना कर प्राप्त किया है, कोई सुख नहीं मिला। मिलेगा ! तू कहता है ? कलियुग ! यह तेरे मुँह से निकले हुये अक्षर हैं। तू ने मुझे अधर्मिनी बना दिया, अब क्या कहता है ? क्या चाहता है ? मैं इस धन दौलत को लेकर संसार में सुख भोगूँ ? अच्छा ! अच्छा ! यदि तेरी यही इच्छा है तो मैं उसके अनुसार इस तिजूरी को खोलती हूँ। सरप्रताप की जमा की हुई माया, जो बहुत जल्द कामिनी को मिलने वाली है, निकाले लेती हूँ।

(तिजूरी खोलती है, चाभी लगी छोड़ कर उसके अन्दर जाती है, तिजूरी के किवाड़ भेड़ लेती है।

मुलाज़िम—(आकर) हैं ! आज यह क्या बात हुई ? बाई जी तिजूरी में चाभियाँ लगी हुई छोड़ कर कहाँ चली गईं ? इसको बन्द करके सन्दूकचे में रख देना चाहिये।

(चाभी बन्द कर ले जाता है)

(रणजीत, कामिनी, हकराम वग़ैरह का पीछे पीछे और सरप्रतापका आगे आगे दीवानावार आना)

रणजीत—आह ! अफसोस, एक स्त्री के लिये कितने तबाह हुये।

सरप्रताप—तबाह ? मैं चाहता हूँ कि संसार के हर छोटे

बड़े को तबाह कर दूँ। संसार की हर वस्तु का नाश कर दूँ। रणजीत! मैं सब को तबाह कर दूँगा। लाओ, इस तिजूरी की चाभियाँ लाओ।

(नौकर का चाभी देना, सरप्रताप का खोलना, मोहनी का अधमरी बाहर निकलना,)

मोहनी—यही! यही वह धन है, कि जिसके कारण यह दशा हुई। लाओ, इसे, इसे, मैं, मैं—क्षमा, आह, वही—बचाओ २ मैं मर रही हूँ। प्राण त्याग रही हूँ! मुझे जिला ले—मुझे बचा ले—आह! जल, तृषा—यम·क्षमा—आह! भगवान!

(मर जाती है)

सरप्रताप—मर गई! जा जा, भगवान तुझे क्षमा करें। यह कौन है? मोहनसिंह तुम हो—यह तुम्हारी स्त्री कामिनी है—यह मेरी बेटी है। परन्तु भूला...मैंने इसे अजीत के साथ विवाह दिया था।

(अजित का आना)

अजीत— नहीं, महाशय! मेरा विवाह इस मालती के साथ हुआ है, यह मेरी धर्मपत्नी है, इसने मुझे सीधा मार्ग बतलाया है। अब अजीत. वह अजीत नहीं रहा, मैं अपने पापों से हर समय व्याकुल रहता हूँ। परन्तु आशा है कि भगवान मुझे क्षमा प्रदान करेंगे, और आप सब लोग भी.....

रणजीत—आह! भगवान, तेरी लीला अपार है। तू जगत में ही मनुष्य को उसके कर्मानुसार का पूर्णफल देता है।

मोहनसिंह ! मेरे प्रिय बन्धु, तुमको तुम्हारी प्रिय अर्धांगिनी जीवन संगिनी कामिनी मुबारक हो !!

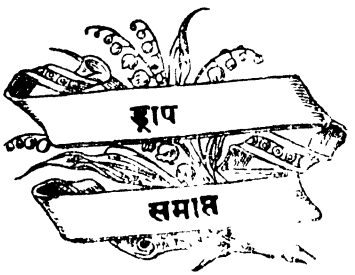

पतिभक्ति की अद्भुत परीक्षा।

मुझे उस मां की चिन्ता है जो सारे जगकी माता है।
चरित जिनका जमाने में भली शिक्षा सिखाता है॥
कि जिनके नाम के आधार पर संसार जीता है।
अखिल ब्रह्माण्ड की रानी, महा माया जो सीता है॥

भला सतियों के मान को बढ़ाने वाली, संसार में सतियों के उत्कट तथा पुण्यमय जीवन का अद्भुत दृष्टान्तस्वरूपा जगत् जननी महासती सीता का चरित्र चित्रण करना इस तुच्छ लेखनी से कब संभव है। किन्तु तौभी इस नाटक में कविने परिश्रम और दिमाग़ लड़ाकर काम लिया है। जिसकी सचाई पुस्तक देखने पर स्वयं विदित हो जायगी। सतीसीता की पतिप्रेमपरायणता, पति पर अटल अनुराग, संसार से विराग, राजभोग के बदले बनवासिनी होने पर भी पतिपर निश्चलप्रेम पराग आदि शिक्षाप्रद बातों का अच्छा दिग्दर्शन कराया है। भक्तिरस, शृंगाररस तथा करुणारस का तो यह मानों ख़ज़ाना है, सुन्दर चित्रों और छपाई की सफाई ने नाटक को और भी उत्तम बनाया है। मूल्य ॥)

पता-शिवरामदासगुप्त, उपन्यास बहार-आफिस, काशी; बनारस।

भारतवर्ष

भारत की पुकार-देश का उद्धार ।

हिन्द के मंदिर में कासिद हूँ मैं बैतुल्लाह का ।
राहबर हूँ दो घरोंके एक रस्मों राह का ॥
बदन हिन्दू से औ आँखें मुसलमानों से पाई हैं ।
हरम की खिड़कियाँ काशी के मंदिर में लगाई हैं ॥

यह नाटक नहीं, वरन भारतवर्ष के मुर्दा दिलों में नवीन जीवन का संचार करनेवाला; भारतसुधार के मार्ग को सुदृढ़ बनाने वाला, हिन्दू मुसलमान दोनों भाइयों के दिल में प्रेम और ऐक्यता का बीज बोने वाला एक सजीव संजीवनी बूटी है, धर्म की आलोचना; भारत की आर्थिकदशा का अपूर्व दर्शन, परस्पर का प्रेमसम्मिलन, हिन्दू मुसमान का प्रेमाकर्षण तथा समयोपयोगी बातों का शिक्षापद उद्घाटन इस नाटक में बड़े ही अच्छे ढंग से नजर आयगा। कविता की गंभीरता, भाव की मार्मिकता पर चित्त एक बारगीही मुग्ध हो जायगा, देखते ही तबीयत फड़क उठेगी, दिल में देशसेवा योगधारण और भारत के दुःखनिवारण का जोश लहरा उठेगा। साथ ही मनोहर कवितायें, सुन्दर गायनों और सीन सिनरियों से सजने के कारण इसकी मनोहरता और उपयोगिता का आसन और भी ऊँचा होगया है। अस्तु, अनुरोध है कि इसे एकबार अवश्य देखिए और भारतवर्ष के गौरव को बढ़ाने में यथेष्ट मन दीजिये। सुन्दर छपाई और चित्रों सहित मू० ॥।)

पता-शिवरामदासगुप्त, उपन्यास-बहार-आफिस, काशी, बनारस।